चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
STORY MAGAZINE

Chandamama, April '50 Photo by K. Muthuramalingam

दोस्ती

चन्दामामा

विषय सूची

इनके अलावा मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रँगीले चित्र, और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास-१

ग्राहकों को एक सूचना

★

चन्दामामा हर महीने पहली तारीख के पहले ही डाक में भेज दिया जाता है। इसलिए जिनको चन्दामामा न पहुँचा हो वे तुरंत डाक घर में पूछताछ करें और फिर हमें सूचित करें। १०-वीं तारीख के बाद हमें पहुँचने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान न दिया जाएगा। कुछ लोग तीन-तीन महीने बाद हमें लिखते हैं। पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

व्यवस्थापक : 'चन्दामामा'

पो. बा. नं. १६८६ :: मद्रास-१

चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र

संचालक : चक्रपाणी

वर्ष १ | अप्रैल १९५० | अङ्क ८

मुख–चित्र

यशोदा की कोख से जो लड़की पैदा हुई थी वह योग-माया थी। वसुदेव ने उसे लाकर ज्यों ही देवकी के हाथों में रखा त्यों ही वह लड़की जोर-जोर से रोने लगी। तुरन्त रखवाले जाग गए और उन्होंने दौड़ते-दौड़ते जाकर कंस को यह खबर सुनाई। कंस जो चाहता था आखिर वही हुआ। वह तुरन्त कैद-खाने में पहुँचा। उसने देवकी के हाथों से उस नौनिहाल बच्ची को छीन लिया। देवकी बहुत गिड़गिड़ाई—"भैया! यह बच्ची है। यह तुम्हारा क्या बिगाड़ सकती है? मेरे सात लाल तो गए। कम से कम इस बच्ची को तो जीती रहने दो!" लेकिन कंस ने उसकी एक न सुनी। उसने उस बच्ची को दोनों हाथों से पकड़ कर ऊपर उठाया कि चट्टान पर पटक कर उसकी जान ले लें। लेकिन वह उसके हाथों से छूट कर आसमान में उड़ गई और वहां अपने निज-स्वरूप में प्रत्यक्ष हुई। उस देवी ने कंस से कहा—"रे पगले! तेरी सारी सावधानी किसी काम न आई। तेरा नाश करके अधर्म के राज का अन्त करने वाला पैदा हो गया है और सुख से पल भी रहा है।" यह कह कर वह देवी अन्तर्धान हो गई।

भय का भूत

चले हाट से लौट गाँव की
ओर सेठ श्री सीताराम ।
बीत चली थी साँझ और था
ज़रा दूर पर उनका गाँव ।

निर्जन पथ पर लालाजी ने
जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाया ।
उधर अकेला, धुँधला, पीला
चन्दा पश्चिम में उग आया ।

चलते चलते उठ खड़े हुए
सहसा लालाजी के रोंएँ ।
कुछ आहट सी पड़ी कान में
जैसे कोई पीछे आए ।

बचपन से ही भूतों से डर
खाते थे लाला बेचारे ।
चला पसीना छूट बदन से,
लगे दौड़ने भय के मारे ।

इतने में बजरङ्ग-बली का
नाम याद आया जब उनको
सुन्दर-कांड लगे रटने वे
धैर्य बँधाने को निज मन को ।

'वैरागी'

एक बार जब नज़र उन्होंने
पीछे फेरी डरते डरते,
दीख पड़ा कुछ काला काला
भूत उन्हीं का पीछा करते।

किसी तरह तब धीरज धर कर
निज प्राणों की आस छोड़ कर
'दुष्ट! कहाँ तू आता है यों?'
चिल्लाए वे गला फाड़ कर।

किन्तु भूत वह बड़ा निडर था
खड़ा रहा त्यों ही बन पत्थर।
कहा सेठजी ने मन में तब
दूर भगाऊँ इसे मार कर।

पत्थर लेने झुके भूमि पर
किन्तु नज़र थी उसी भूत पर।
देखा–उनके साथ भूत ने
भी ले लिया हाथ में पत्थर।

सब कुछ समझ गए, वे बोले
'रे! यह थी मेरी ही छाया!
भय का भूत बड़ा है सब से;
बड़ी विलक्षण उसकी माया!'

एक देश में एक राजा था। बहुत दिनों तक उसके कोई सन्तान न हुई। राजा बहुत चिंतित रहने लगा। उसने कुछ दिन बाद एक दूसरा ब्याह कर लिया। दूसरी रानी बड़ी सुन्दरी और सुशील थी।

बहुत दिनों बाद छोटी रानी गर्भवती हुई। राजा अब छोटी रानी को और भी प्यार करने लगा। बड़ी रानी यह सब देख कर मन ही मन जलने लगी। इसी तरह आठ महीने बीत गए। एक दिन राजा शिकार खेलने निकला। जाते समय उसने छोटी रानी से कहा—"मैं शिकार खेलने जा रहा हूँ। अगर इस बीच में प्रसव हो जाए तो महल की घण्टियाँ बजवा देना। घण्टी का शब्द सुनते ही मैं आ जाऊँगा।" यह कह कर राजा शिकार खेलने चला गया।

दूसरे ही दिन छोटी रानी के जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। दोनों बेटे ही थे। अब तो बड़ी रानी के पेट में खलबली मच गई। उसने छोटी रानी के भोजन में कोई दवा मिला दी। इससे छोटी रानी के होश-हवास जाते रहे। तब बड़ी रानी ने दासियों से कह कर उन दोनों बच्चों को बाहर के बग़ीचे में फैंकवा दिया और बच्चों के बदले छोटी रानी के पलंग पर लकड़ी के दो कुन्दे रखवा दिए। यह सब कारगुज़ारी करके उसने महल की घण्टियाँ बजवा दीं। उसने दासियों को बहुत सा घूस दिया जिससे वे किसी से कहें नहीं।

शिकार खेलते-खेलते राजा ने जैसे ही अपने महल की घण्टियों की आवाज़ सुनी वह खुशी से उछल पड़ा और उल्टे पैर लौट आया। महल के अन्दर पाँव रखते ही बड़ी रानी ने आकर कहा—"सुना आपने! आपकी लाड़ली रानी ने दो कुन्दे पैदा किए हैं।" राजा घबराया हुआ प्रसव-घर में गया। वहाँ जाकर देखता क्या है कि सचमुच

किशोरीलाल

पलंग पर दो कुन्दे पड़े हैं। राजा बड़ी रानी के भरोसे में पड़ गया। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही कुन्दे पैदा हुए हैं। कुछ दिन तक तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया। उसकी सारी आशाएँ मिट्टी में मिल गईं। धीरे-धीरे उसने मन को सम्हाला।

बगीचे में फेंके हुए उन सुन्दर बच्चों को राजमहल की एक नेक दासी ने देखा। वह उन बच्चों को अपने घर ले जाकर बड़े जतन से पालने लगी। दोनों राजकुमार उस दासी के घर में सुख से पलने लगे। दासी अपनी जान लगा कर उनकी देख-भाल करती थी। वे बड़े हुए। उनके रूप, गुण और शील को देख कर सब लोग अचरज में पड़ जाते थे।

इसी तरह कुछ और बरस बीत गए। एक दिन उन राजकुमारों ने दासी से पूछा—"माँ! हमारे पिताजी कहाँ हैं? सभी बच्चों के बाप घर आते हैं। अपने बच्चों के लिए बहुत-सी चीज़ें लाते हैं। बच्चे अपने बाप की गोद में चढ़ कर घूमते-फिरते हैं। हमारे पिताजी कहाँ गए? घर क्यों नहीं आते? हम उनको कब देखेंगे, माँ?" दासी ने कहा—"तुम दोनों यहाँ के राजा के पुत्र हो। तुम्हारे पिता के दो रानियाँ हैं। छोटी रानी तुम्हारी माँ है। तुम्हारी सौतेली माँ ने तुम दोनों के पैदा होते ही डाह के कारण एक बगीचे में फिंकवा दिया और राजा से कह दिया कि तुम्हारी माँ ने लकड़ी के दो कुन्दे पैदा किए हैं। राजा ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। संयोग से उस दिन मैं बगीचे में गई और तुम लोगों को पड़े देख कर घर उठा लाई और छिपा कर पालने-पोसने लगी।" उसने सारा किस्सा उन दोनों भाइयों को कह सुनाया। सुन कर राजकुमारों ने कहा—"अच्छा, ऐसी बात है!" फिर वे खेलने चले गए।

वे राजमहल के उसी बगीचे में एक जगह खेला करते थे। राजमहल की खिड़कियों से वह जगह अच्छी तरह दिखाई देती थी। राजा रोज महल पर से उन्हें खेलते हुए देखता था। उनके सुन्दर प्यारे-प्यारे मुखड़े देख कर राजा के हृदय में एक हूक सी उठ जाती थी। वह सोचने लगता—'ये प्यारे बच्चे न जाने किसकी आँखों के तारे हैं। जाने, उसने कौन-से पुण्य किए थे कि ऐसे पुत्र पाए! मेरा तो भाग्य फूट गया। बड़ी आस लगा कर दूसरा ब्याह किया। लेकिन दुर्भाग्य, उसने पैदा किए लकड़ी के कुन्दे! जाने, लोग अपने मन में क्या सोचते होंगे!'

एक दिन राजा सवेरे-सवेरे बगीचे में टहलने गया। उस समय वे दोनों राजकुमार भी वहाँ खेल रहे थे। एक के हाथ में एक काठ का हाथी था और दूसरे के हाथ में मिट्टी का एक हाथी। मिट्टी के हाथी वाला राजकुमार अपने हाथी को तालाब के किनारे ले गया और बोला—'हाथी मेरे! पानी पी, सूंड़ उठा कर पानी पी!' दूसरे ने भी अपने हाथी से कहा—'हाथी मेरे! पानी पी, सूंड उठा कर पानी पी!' राजा वहीं खड़ा-खड़ा यह सब देख-सुन रहा था। बच्चों के पास आकर उसने कहा—"बच्चो! कहीं मिट्टी और काठ के हाथी भी पानी पीते हैं!" बच्चो! जानते हो, उन दोनों लड़कों ने क्या जवाब दिया! दोनों ने एक स्वर में कहा—"पियेंगे क्यों नहीं! जब यहाँ के राजा के घर में रानी के गर्भ से कुन्दे पैदा होते हैं तो हमारे ये हाथी पानी क्यों न पियेंगे!"

बच्चों के मुँह से यह बात सुन कर राजा सन्नाटे में आ गया। उनकी बातें उसके हृदय में चुभ-सी गईं। उसने सोचा—"इन दुधमुँहे बच्चों को राजमहल का रहस्य कैसे मालूम हुआ! यह तो पाँच साल पहले की बात है। इन्हें कैसे मालूम हो सकी! जरूर

इसमें कोई न कोई भेद भरा है।" यह सोच कर उसने उन लड़कों से पूछा—'बच्चो, तुम्हारी बातें सुन कर मुझे बड़ा अचरज हो रहा है। बताओ तो, तुम किसके बेटे हो?'

लड़कों ने कहा—'हम इस देश के राजा के लड़के हैं। बुढ़िया ने पाल-पोस कर हमको बड़ा किया है।' यह कह कर उन्होंने राजा को अपना घर भी दिखा दिया। राजा तुरन्त बुढ़िया के पास गया और सारा किस्सा सुन कर अचरज में आ गया। उसने बुढ़िया को बहुत धन्यवाद दिया और बड़ी खुशी से दोनों लड़कों को अपने साथ महल में ले गया।

महल में जाकर उसने तुरन्त बड़ी रानी को बुलाया और डपट कर पूछा—"सच सच बोलो! क्या छोटी रानी के कुत्ते ही पैदा हुए थे?" बड़ी रानी को काटो तो खून नहीं! उसने थर-थर काँपते अपनी करतूत की कहानी कह दी और रोते हुए राजा के पैरों पर गिर पड़ी। छोटी रानी घर से निकली और सब हाल जान कर अनुरोध करने लगी कि बड़ी रानी को माफ़ कर दिया जाए। राजा ने छोटी रानी की बात मान कर बड़ी रानी को माफ़ कर दिया।

शुभ घड़ी देख कर राजा ने बुढ़िया और राजकुमारों को अपने महल में बुलवा लिया। दोनों बच्चों को देख कर छोटी रानी पागल हो उठी। आँसू बहाते हुए, पुलकित होकर उसने दोनों को छाती से लगा लिया। बड़ी रानी भी बदल गई और उन बच्चों को अपनी गोद में लेकर आँसू बहाने लगी। सब के मन का मैल धुल गया। बच्चों को देख कर सबों का दिल उमड़ पड़ा। सबों ने उस दासी को दिल से धन्यवाद दिया। राजा ने बुढ़िया को बड़े आदर के साथ राजमहल में रखा। राज भर में घर घर में दिवाली मनाई गई।

आगे बढ़ो !

[कुमार अजित]

उलझी उलझी राहें हों,
ऊँची नीची चाहें हों,
खाई-खन्दक, नाले हों,
गोली हो या भाले हों,
  हमको कुछ परवाह नहीं !

हमको तो आगे बढ़ना,
पर्वत की चोटी चढ़ना,
बाधाओं से क्या डरना ?
अरे ! एक दिन है मरना,
  हमको कुछ परवाह नहीं !

ये सब छोटी बातें हैं,
भय देने की बातें हैं,
पीछे लौटें वीर नहीं,
पीछे मुड़ना वीर कहीं ?
  हमको कुछ परवाह नहीं !

चले बहुत धीरे अब तक,
भला चलेगा यह कब तक ?
आज उमंगें मन भर लो !
वीर ! तरंगों पर तिर लो !
  आज करो परवाह नहीं !

माँझी !

['रमेश']

माँझी ! ले चल नैया पार !
अभी किनारा बहुत दूर है,
मत हिम्मत तू हार !

  सरिता की लहरें लहराती
  आती हैं मद-माती !
  डग-मग नैया तेरी डोले,
  लहरें होड़ लगातीं !

सँभल सँभल कर चला इसे तू
छूटे ना पतवार !
माँझी ! ले चल नैया पार !

  मैं इससे अब प्यारे माँझी !
  अतिशय ही हूँ डरता !
  उछल उछल अब पानी इसमें,
  देख, आ रहा भरता !

ले चल, इसको अभी किनारे,
लंगर जल्दी डाल !
माँझी ! ले चल नैया पार !

कुछ ही देर में रानी को होश आया और वह चिल्लाई—"हाय! मैं इस पेटी में कैसे आ गई! मैं कहाँ हूँ!" उसका चिल्लाना सुन कर नीचे रखवालों की जान में जान आई। उन्होंने सोचा—'हाँ! नागराज रानी का बाल भी बाँका न कर सका। रानी सही-सलामत है।' यह सोच कर उन्होंने उस पेटी को जल्दी से नीचे उतारा। ताला खोल कर देखा। लेकिन भगवान! यह क्या! पेटी के अन्दर खून के पनाले बह रहे थे। सब लोग माथा पीटने लगे। राजा ने कटार निकाल कर अपनी छाती में भोंक लेना चाहा। लेकिन मन्त्रियों ने उनका हाथ पकड़ कर कहा—'राजन्! अधीर न होइए। साँप के डसने से सभी लोग मर नहीं जाते! हमारे राज में बड़े-बड़े ओझा-गुनी हैं। उनकी झाड़-फूँक से रानी ज़रूर उठ बैठेंगी।' तुरंत सैकड़ों नामी ओझा-गुनी आकर रानी को झाड़ने-फूँकने लगे।

इतने में रानी ने फिर आँखें खोल कर राजा को बुलवाया और हाथ पकड़ कर कहा—' महाराज! आपके सारे प्रयत्न व्यर्थ हैं। मैं अब सिर्फ चन्द मिनट की मेहमान हूँ। सारे संसार में कोई ऐसा ओझा-गुनी नहीं है जो मेरी जान बचा सके। इसलिए मैं आपसे एक प्रतिज्ञा कराना चाहती हूँ। आप भी कसम खाकर प्रतिज्ञा कीजिए कि जब तक मेरी इन बेटियों का ब्याह कर उन्हें ससुराल नहीं विदा कर देंगे, तब तक आप दूसरा ब्याह न करेंगे। क्योंकि यदि आप एक दूसरा ब्याह कर लेंगे तो सौत आकर मेरी लड़कियों को नाहक सताएगी और भूखों मार देगी। मैं इन दुधमुँही बच्चियों को आप के हाथों में सौंप जाती हूँ।" राजा ने तुरंत कसम खाकर कहा—'मैं दूसरा ब्याह करूँगा ही नहीं।'

बेचारी रानी के भाग्य में आखिरी बार सन्तान का मुँह देखना भी नहीं बदा था।

वह उसके पहले ही चल बसी। बरसों जितने सन्तान के लिए तपस्या की, मनौतियाँ मनीं, व्रत-उपवास किए, आखिर वह सन्तान से मिले बिना ही चल बसी। आखिरी दम तक वह लड़कियों का ही नाम रटती रही।

यों कुछ दिन बीत गए। राजा ने लड़कियों को माँ की कमी महसूस न होने दी। दरबारियों ने कई बार दूसरे ब्याह की चर्चा चलाई। मन्त्रियों ने बहुत आग्रह किया। लेकिन राजा ने इनकार कर दिया।

आखिर मन्त्रियों ने एक उपाय सोचा। उन्होंने राजा की सातों बेटियों को एकान्त में बुला कर कहा—'राजकुमारियो! हमने तुम्हारे पिताजी से कई बार दूसरा ब्याह करने का आग्रह किया। लेकिन वे तो हमारी बात मानते ही नहीं। अगर तुम सातों बहनें उन पर ज़ोर डालो तो शायद मान जाएँ। नई माँ आएगी तो तुम लोगों की भी अच्छी तरह देख-भाल करेगी।'

अब सातों लड़कियों ने भी राजा से दूसरा ब्याह कर लेने का आग्रह किया। लेकिन राजा ने उनकी बात भी टाल दी।

लाचार होकर मन्त्रियों ने एक और उपाय किया। उन्होंने बहुत से कोल-भीलों को भेज कर सारा जंगल छनवा डाला। आखिर उन्हें मोहिनी-जड़ी मिली। उस जड़ी की महिमा ऐसी थी कि जो उसको खा ले, तुरंत तन-मन की सुध भूल कर ब्याह के लिए पागल हो उठे। मन्त्रियों ने रसोइए से कह कर राजा के भोजन में वह जड़ी मिलवा दी। उसका असर ऐसा हुआ कि दूसरे ही दिन राजा ने मन्त्रियों को बुलवा कर कहा—"मैं ब्याह करना चाहता हूँ। तुरन्त किसी सुन्दर राजकुमारी को ढूँढ लाओ।"

मंत्री तो इसी ताक में बैठे ही थे। उन्होंने तुरन्त चारों ओर पुरोहितों को दौड़ा दिया। उनमें से एक ने अमरपुर के राजा

की कन्या को देख कर निश्चय किया कि यह लड़की महाराज के लायक है। उस राजकुमारी का नाम था रत्नादेवी। चित्र देखने पर मंत्रियों ने भी उसे पसन्द किया। ब्याह के लिए शुभ मुहूर्त भी ठीक हो गया।

महाराज शुभ घड़ी में बारात सजा कर अक्षयपुर गए और रत्नादेवी को ब्याह लाए। लेकिन न जाने क्यों, उस ब्याह में असगुन ही असगुन हुए। लौटते वक्त बारात एक पेड़ के नीचे से गुजर रही थी। ठीक उसी समय एक डाली टूट कर बारातियों पर गिरी। पर राजा बाल-बाल बच गया।

राजधानी में आने के बाद राजा ने मंत्रियों और पुरोहितों को बुला कर कहा—"तुम्हीं लोगों ने मेरे ब्याह की बात उठाई। तुम्हीं ने लड़की पसन्द की। लग्न भी तुम्हीं ने ठीक किया। फिर इस ब्याह में इतने असगुन क्यों हुए? क्या तुम में से कोई बता सकता है कि इसका मतलब क्या है?"

मंत्रियों ने कई तरह की बातें बना कर राजा की शंका दूर करनी चाही। लेकिन राजा का मन निःशंक नहीं हुआ। बूढ़ी का असर अब तक मिट गया था। अपनी कसम उसे याद आ गई। इसलिए नई रानी से

उसका चित्त उचट गया। उसने उसके लिए अलग महल बनवा दिया। वह खुद सातों लड़कियों के साथ दूसरे महल में रहने लगा। वह कभी नई रानी के रनवास की तरफ न जाता था और न उससे कोई बातें ही करना चाहता था।

एक दिन राजा को किसी काम से राज छोड़ कर कहीं बाहर जाना पड़ा। लड़कियों को छोड़ कर वह कहीं नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसने मंत्रियों से कहा कि मैं राजकुमारियों को साथ ले जाऊँगा।

यह बात जब रत्ना देवी को मालूम हुई तो उसने चुपके से अपनी सौतेली लड़कियों के पास जाकर कहा—"प्यारी बेटियो! राजा तुम्हें भी अपने साथ परदेश ले जाना चाहते हैं। लेकिन तुम परदेश जाओगी तो बताओ, वहाँ तुम्हें कौन नहलाए-धुलाएगा? कौन खिलाए-पिलाएगा? तुम्हारी देख-भाल कौन करेगा? इसलिए अच्छा हो अगर तुम पिताजी से कह दो कि हम तुम्हारे साथ नहीं जाएँगी। कहो, हम लोग यहीं नई अम्मा के पास रहेंगी।"

राजा ने जब लड़कियों से चलने की बात चलाई तो उन्होंने इनकार कर दिया। राजा ने सोचा—'जब इन्हें नई रानी से इतना प्रेम है तो हर्ज क्या! इन्हें यहीं रहने दूं।' वह उन्हें रत्नादेवी के महल में छोड़ कर चला गया।

दूसरे दिन अमावस्या थी। रत्नादेवी ने सातों लड़कियों को अपने पास बुला कर कहा—'बेटियो! आज पूनो है। जो लड़कियाँ आज व्रत करती हैं और दिन भर उपवास कर के रात को चन्द्रमा का मुँह देखने के बाद पारण करती हैं उन्हें अच्छे वर मिलते हैं। तुम लोग भी आज उपवास करो न!'

भोली-भाली लड़कियों ने पहले तो उसकी बात मान ली। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता गया, भूख के मारे उनकी अंतड़ियाँ ऐंठने लगीं और पेट में चूहे कूदने लगे। आखिर उन्होंने अपनी सौतेली माँ से कहा—'अच्छे वर मिलें या न मिलें हमारी बला से। हम भूखी नहीं रह सकतीं। हमें खाना दो।'

यह सुन कर रानी ने मुँह बिगाड़ कर कहा—'कुलच्छिनियो कहीं की! तो फिर तुम लोगों ने कहा क्यों कि हम व्रत करेंगी? क्या मैं तुम्हारे लिए हमेशा चूल्हे पर हाँडी चढ़ाए रहूँ!' यह कह कर उसने सब को कस-कसके दो दो तमाचे लगा दिए। बेचारी बच्चियों से अब तक किसी ने ऐसा सलूक न किया था। सब सिसक-सिसक कर रोने लगीं। अब उन्हें पछतावा हुआ कि वे पिता के साथ क्यों न गईं?

रानी ने फिर कहा—'व्रत करने वाली कभी बेकार नहीं बैठतीं। इसलिए तुम लोग घड़े उठा कर कुँए से पानी भर लाओ।' यह कह कर उसने उनको सात फूटे घड़े दिए।

राजा की लाड़ली लड़कियाँ, हाय! उन्हें अपने हाथों काम करने की नौबत कभी आई

थी ! घड़े तो दूर, कभी लुटिया में भी उन्होंने पानी नहीं भरा था। फिर वे कुएँ से पानी कैसे खींचतीं ! लेकिन बेचारी करें तो क्या ! सौतेली माँ का डर जो कँपा रहा था ! उन्हें प्यास भी ज़ोर से लग रही थी। डरती-डरती उन्होंने थोड़ा पानी माँगा तो सौतेली माँ ने जवाब दिया—'पहले पानी भर लाओ ! तभी पीने को पानी मिलेगा।' बेचारी सातों बहनें सात घड़े उठा कर कुएँ की ओर चलीं। उनकी आँखों से टपटप आँसू बह रहे थे। मन में माँ की याद आ रही थी। माँ के सिवा उनकी सुध कौन लेता !

लक्ष्मी देवी को अपनी भूखी-प्यासी सन्तान की पुकार सुनाई पड़ी तो उसने उस कुएँ के पास केले के पेड़ उगा दिए। सातों बहनों ने जब पके हुए केले देखे तो वे खुशी से उछल पड़ीं। उन्होंने भर-पेट केले खाए और फिर घड़ों में पानी भर कर लौट पड़ीं। लेकिन फूटे घड़ों में पानी कैसे टिकता ! घड़े उठाते ही सारा पानी बह गया। उनके कपड़े भीग गए। जब तक वे घर पहुँचीं तो घड़ों में बूँद भर पानी भी न रह गया। 'ये घड़े तो फूटे हैं मौसी !' लड़कियों ने सौतेली माँ से कहा।

"कलमुँहियो ! तुमने पानी तो भरा नहीं; ऊपर से घड़े भी फोड़ लाईं !" यह कह कर नई रानी ने एक छड़ी उठाई और लगी उन्हें सटा-सट मारने। बेचारी तड़प तड़प कर रह गईं। रोती-रोती उन्होंने कहा—'मौसी ! हमें क्यों इस तरह सताती हो ! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? खाना न सही, क्या हमें पीने के लिए थोड़ा पानी भी न दोगी !'

'अच्छा, ठहरो ! अभी तुम्हारे लिए दूध ला देती हूँ।' यह कह कर रानी अन्दर गई। उसने सात लोटों में दूध भर कर

उनमें ज़हर मिला दिया और लाकर उन्हें दे दिया। बेचारी लड़कियों को क्या मालूम था? निधड़क उसे पी गईं। लेकिन पल में ज़हर ने अपना प्रभाव दिखाया। उनकी छाती धड़कने लगी। जीभें सूख गईं और आँखें जलने लगीं। उन्होंने कहा—'अरे! यह दूध तो बड़ा कड़ुवा है मौसी!'

"नहीं तो क्या तुम्हारे लिए अमृत रखा हुआ है यहाँ!" यह कह कर रानी ने उन सबको एक अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया और बाहर से साँकल चढ़ा दी।

लक्ष्मी देवी ने जब अपनी अधमरी संतान को देखा तो उसने ज़हर का प्रभाव दूर कर दिया। लड़कियाँ मीठी नींद में सो गईं।

रमादेवी रात को निश्चिंत होकर सोई। उसने समझा कि सबेरे तक उसके कलेजे का काँटा दूर हो जाएगा। लेकिन जब सबेरे उठ कर उसने उतावली के साथ कोठरी का दरवाजा खोला तो उसके अचरज का ठिकाना न रहा। लड़कियाँ तो अभी जीती थीं। "मौसी! चाँद उगा कि नहीं!" उन्होंने पूछा। "अभी नहीं उगा है। तुम लोग सो

जाओ। जब उगेगा तो मैं तुमको जगा दूँगी।" यह कह कर रानी फिर कोठरी का दरवाजा बन्द कर चली गई। उसे बड़ा अचरज हुआ कि ये लड़कियाँ कैसे बच गईं!

दूसरा दिन भी बीत गया। लड़कियों ने रानी से पूछा—"मौसी! क्या चाँद अभी तक नहीं उगा?" 'चाँद उगा और डूब भी गया।' रानी ने कहा। 'तब हमें खाना दो न?'

'तुम चाँद देखे बिना खा लोगी तो बूढ़े वर मिलेंगे।' रानी ने कहा।

'लेकिन हमें बड़ी भूख जो लग रही है? अब हम खाना खाये बिना नहीं रह सकतीं मौसी!' लड़कियों ने रोते हुए कहा।

'अच्छा तो नहा-धोकर आ जाओ। मैं खाना परोसती हूँ।' रानी ने कहा।

'लेकिन मौसी! हमें अँधेरे में डर लगता है।' लड़कियों ने कहा।

'तुम्हें कोई भूत नहीं खा जाएगा। अच्छा, चलो! मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।' यह कह कर रानी उन्हें अपने साथ नगर के बाहर जङ्गल में एक उजाड़ मंदिर के पास ले गई। "तुम लोग अन्दर जाकर देवता को प्रणाम कर आओ। तुम्हें अच्छे वर मिलेंगे।" यह कह कर रानी ने लड़कियों को अन्दर भेज कर बाहर से ताला लगा दिया और महल में लौट आई।

ये अबोध लड़कियाँ नौ दिन तक बिना दाना-पानी के उजड़े मंदिर में बंद रहीं। माँ के सिवा उनकी सूखी देहें और चिपके हुए पेट देख कर कौन तरस खाए?

लक्ष्मी देवी ने जब अपनी सन्तान को भूख से तड़पते हुए देखा तो उसने मंदिर में अनेकों शहद के छत्ते लगा दिए। अधमरी लड़कियों के मुँहों में मधु की धार बरसने लगी। थोड़ी देर में उनकी भूख मिट गई और तन में जान आई। [सशेष]

पुराने ज़माने में एक कथावाचक रहता था। वह एक ढोलक और एक मंजीरा बजाने वाले को साथ लेकर, गाँव-गाँव घूम कर कथा बाँचा करता था। वह एक बार एक गाँव में गया। जाकर उसने मुखियों को अपने आने की खबर दी। कथावाचक के आने की बात सुनते ही गाँव-वाले बड़े खुश हुए। उन्होंने जोश के साथ कथावाचक जी से रामायण की कथा करवाने का इन्तज़ाम किया।

लेकिन तब सवाल उठा कि कथावाचक को खिलाए-पिलाएगा कौन? तब बेचूराम पाँडे ने, जिनको कथा सुनने का बड़ा शौक था, तुरन्त उठ कर कहा—'जितने दिन कथा होगी, कथावाचक और उनके साथियों को जीमने के लिए मेरा घर छोड़ कर और कहीं जाने की ज़रूरत न होगी।' यह सुनते ही गाँव-वाले बड़े खुश हुए। चारों तरफ़ पाँडे जी की वाहवाही होने लगी। लेकिन पाँडे जी की पत्नी सूरजमुखी देवी को दूसरों के घर खाने का शौक था। किसी को अपने घर खिलाने का शौक न था। पाँडे जी की इस मूर्खता की ख़बर जब उन्हें लगी, तो उनके दिल की धड़कन एक बार रुक गई। पंडितजी ने दस आदमियों के बीच यह न्योता दिया था। इसलिए अब टालने का कोई उपाय तो था नहीं। सूरजमुखी देवी बहुत देर तक सोचती रही। आखिर उसने एक ऐसा उपाय सोच निकाला जिसमें साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे। जब पति ने पूछा कि आज रसोई क्या-क्या बना रही हो तो उसने जवाब दिया—'आज पहला दिन है। इसलिए कुछ पकवान बनाना चाहती हूँ। आप बाज़ार जाकर आटा, शक्कर और घी ले आइए।' यह सुन कर पाँडेजी ने सोचा—"अहा! ऐसी आज्ञाकारिणी पत्नी दूसरी कहाँ मिलेगी!" वे तुरन्त बाज़ार जाकर चीज़ें ले आए।

गणेशप्रसाद गुप्त

पण्डिताइन रसोई बनाने लगी। पांडे जी मेहमानों को बुला लाए और बैठक में बिठा कर उनसे इधर-उधर की बातें करने लगे। कत्थक जी ने कुछ गाने सुनाए। पांडेजी की खुशी का ठिकाना न रहा। इधर पण्डिताइन जी ने सिर्फ अपने घर के लिए रसोई बनाई। उसने पण्डितजी को बुला कर कहा—"अब आप हाथ-पाँव धोकर खा सकते हैं।" यह सुन कर पण्डितजी मेहमानों के साथ हाथ-पाँव धोकर आए। वे खाने के लिए बैठना ही चाहते थे कि पण्डिताइन ने कहा—'हाय रे मेरी अक्ल! मैं तो पत्तल की बात ही भूल गई थी। घर में पत्तल तो है नहीं।' "अच्छा, तुम कोई चिन्ता न करो। मैं अभी ले आता हूँ।" यह कह कर पण्डितजी चाकू लेकर तालाब के किनारे बाड़ी में केले के पत्ते काटने गए।

पति के लाए हुए आटे से पण्डिताइनजी ने पकवान तो बना लिए। लेकिन थोड़ा-सा आटा बचा कर उसने तीन पुतले बनाए। पण्डिताइन जी के चार लड़के थे जो वहीं बैठे-बैठे यह सब देख रहे थे। उनमें एक ने उन पुतलों को देख कर पूछा—"माँ! माँ! ये कौन हैं?" तब पण्डिताइन जी ने जरा जोर से, जिससे उसकी बात बैठक में मेहमानों को सुनाई पड़े, जवाब दिया—"ये तो कत्थक महाराज हैं। ये ढोलक-वाले हैं और ये मंजीरे-वाले हैं।" बाहर बैठे मेहमानों को क्या मालूम था कि ये आटे के पुतले हैं? उन्होंने समझा कि उन्हीं के बारे में बातचीत हो रही है। दूसरा बच्चा फिर पुतलों की ओर उँगली उठा कर बोला—'माँ! तुम इन्हें क्या करोगी?' "खौलते हुए तेल में डाल कर इन्हें धीमे-धीमे पकाऊँगी।" माँ ने जवाब दिया। यह सुन कर बाहर बैठे कत्थक और उनके साथियों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। बेचारे काल

खड़े करके सुनने लगे। पण्डिताइन कह रही थी—'जब ये अच्छी तरह पक जाएंगे तो तुम लोगों को दे दूंगी।' तब बड़े लड़के ने पहले पुतले की ओर देख कर कहा—"माँ! मैं कत्थक को खाऊँगा।" दूसरे लड़के ने दूसरे पुतले की ओर उंगली उठाई—"माँ! मैं ढोलक-वाले को खा जाऊँगा।" तीसरे लड़के ने तीसरे पुतले की ओर गौर से देख कर कहा—"माँ! मैं मंजीरे-वाले को खा जाऊँगा।" ये बातें सुन कर बाहर बैठे मेहमानों के बदन से पसीना छूटने लगा। वे लोग काना-फूसी करने लगे—"कहीं हम भूल से भूतों के घर में तो नहीं आ गए हैं!" इधर अपने तीनों भाइयों की बातें सुन कर चौथे से न रहा गया और उसने हठ करते हुए कहा—"माँ! माँ! तुम भैया को एक भी न दो! तीनों को मैं ही खा जाऊँगा।" बस, अब मेहमानों को कोई शंका न रही। उनको विश्वास हो गया कि जरूर वे राक्षसों के घर में आ गए हैं। वे लोग सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए। पीछे घूम कर भी नहीं देखा। आखिर जब दूसरे गाँव में पहुँच गए, तब उन्होंने दौड़ना बन्द किया और सुस्ताने लगे।

पांडेजी पत्ते लेकर घर पहुँचे तो देखा कि बैठक में मेहमान नहीं हैं। उन्होंने पत्नी से पूछा—'मेहमान लोग कहाँ गए?' 'क्यों! क्या वे बैठक में नहीं हैं?' पण्डिताइन ने पूछा! जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो। पांडे जी ने बड़ी देर तक मेहमानों की राह देखी। लेकिन जब सूरज ढलने लगा और वे न आए, तब पछताते हुए पांडेजी उठे और उदास मन से खाने बैठे। पण्डिताइन मन ही मन मुसका रही थी। पर बोली कुछ नहीं।

बेचारे पांडेजी को और गाँव वालों को मालूम ही न हुआ कि कत्थक जी और उनके साथी गाँव छोड़ कर अचानक क्यों भाग गए!

एक समय एक किले में एक राजा रहता था। उस किले के एक ओर एक घना जङ्गल था और उसमें आठ वनदेवियाँ रहती थीं। उनमें सात वनदेवियाँ तो बड़े मीठे स्वभाव की थीं। लेकिन एक बड़ी खोटी थी। वह हमेशा दूसरों की बुराई चाहती रहती थी।

सातों भली देवियाँ छोटी-छोटी कुटियों में रहती थीं। लेकिन आठवीं एक काल-कोठरी में सबसे छिप कर रहती थी। उन्हीं दिनों राजा के एक लड़की पैदा हुई। उस लड़की का दमकता रूप-रङ्ग देख कर उसका नाम 'ज्योतिर्मयी' रखा गया। नगर के सभी लोग ज्योतिर्मयी को देखने आए। कुछ दिन बाद आठों वनदेवियाँ भी उसे देखने आईं। सात देवियाँ तो उसके लिए अच्छे-अच्छे उपहार लाईं। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। लेकिन आठवीं देवी तो बड़ी खोटी थी, उसकी सुन्दरता देखते ही डाह करने लग गई। आशीर्वाद के बदले उसने उसे शाप दिया—'तुम दिन भर नींद में मस्त रहो।'

राजा-रानी यह शाप सुनते ही शोक में डूब गए। यह देख कर पहली देवी ने उसे वरदान दिया—'ज्योतिर्मयी! रात भर जागती रहो!' यह सुन कर आठवीं देवी का क्रोध और भी बढ़ गया और उसने कहा—"अच्छा! ज्योतिर्मयी रात में जागती रहेगी। लेकिन चाँद की तरह पूनों होते ही उसकी ज्योति घटने लगेगी और अमावास होते ही गायब हो जाएगी।" यह सुन कर दूसरी देवी सामने आई और बोली—'एक राजकुमार आकर ज्योतिर्मयी को ज्यों-ही छुएगा त्यों ही यह शाप से मुक्त हो जाएगी।' अब की बार आठवीं वनदेवी चुप हो गई। लेकिन मन ही मन उसने संकल्प कर लिया कि ज्योतिर्मयी को वह कभी चैन से नहीं रहने देगी।

सरला देवी

बेचारी ज्योतिर्मयी दिन भर ऊँघती रहती थी। दिन में उसकी आँखें कभी नहीं खुलती थीं। पूनो के बाद दिन-दिन वह दुबली होने लगती और पीली पड़ती जाती। अमावास को वह सुध-बुध खोकर पड़ी रहती। लेकिन अमावास के बाद दिन-दिन उसका तेज बढ़ने लगता और पूनों को वह अपने समस्त सौंदर्य से भर कर जगमगा उठती।

शाप के कारण ज्योतिर्मयी को लोगों से मिलना जुलना पसन्द नहीं पड़ता था। अपने महल से वह कभी बाहर जाती भी न थी। उसे डर था कि न जाने, लोग अपने मन में क्या कहेंगे। यह देख कर राजा ने उसके लिए जङ्गल में किले के निकट ही, एक सुन्दर कुटिया बनवा दी। राजकुमारी अब अपनी सखियों के साथ वहीं रहने लगी। वह जगह उसे बहुत अच्छी लगती थी। वह वहाँ बहुत आराम से थी।

उस राज के पड़ोस में और एक राज था। दुश्मनों ने चढ़ाई करके उस पर कब्जा कर लिया और राजा को मार डाला। लेकिन राजकुमार अपनी जान बचा कर भाग निकला। वह भेस बदल कर यात्रा करते हुए जंगल में जा पहुँचा और छिप कर अपने दिन काटने लगा। यह वही जंगल था जिसमें ज्योतिर्मयी रहती थी।

चांदनी रात थी। राजकुमार दिन भर भटक-भटक कर थका-मांदा एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। इतने में ज्योतिर्मयी चांदनी रात में चमचम करती, नाचती, थिरकती, मधुर कण्ठ से गाती उसी ओर आ निकली। राजकुमार ने उसे देखा तो दंग रह गया। ऐसी रूपवती कन्या उसने आज तक नहीं देखी थी। उसे यह मालूम न था कि यह पड़ोसी राजा की लड़की है। उसने तो उसका रूप देख कर समझा कि कोई देव-कन्या है। वह एक-टक उसका रूप देखता रहा और मुग्ध होकर तन-मन की सुध भूल गया।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं है।

अब वह राजकुमार रोज उसकी खोज में रहने लगा। लेकिन दिन में वह कभी उसे दिखाई न देती थी। रात को कभी कभी वह उसी पेड़ के पास पहुँच जाती थी। लेकिन राजकुमार उसे देखते ही सुध-बुध गँवा बैठता और वह आँखों से ओझल हो जाती थी। राजकुमार ने यह भी देखा कि दिन-दिन उसकी कांति बढ़ती जाती है। उसने मन में निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो, उस राजकुमारी का पता लगा कर उससे परिचय करना ही चाहिए। इसी लगन में वह सारे जंगल की खाक छानने लगा।

एक दिन जब वह इसी उधेड़-बुन में भटक रहा था तो पहली वनदेवी ने उसे देखा और एक बुढ़िया का रूप धर कर उसे दर्शन दिया। उस वनदेवी को बहुत खुशी हुई कि उसके आशीर्वाद के अनुसार यह राजकुमार भटकता हुआ इस जंगल में आ पहुँचा। उसने सोचा कि अब शीघ्र ही ज्योतिर्मयी शाप से मुक्त हो जाएगी। इसीलिए वह बुढ़िया के वेश में राजकुमार को बुला कर अपनी कुटी में ले गई। वहाँ

उसने राजकुमार का खूब आदर-सत्कार किया। फिर उसने ज्योतिर्मयी की सारी कहानी कह सुनाई और उसे एक जादू का लोटा दिया। उस बुढ़िया का आशीर्वाद पाकर राजकुमार उत्साह के साथ ज्योतिर्मयी को ढूँढ़ने लगा।

अब तक दुष्ट वनदेवी को न मालूम था कि राजकुमार आकर इसी जंगल में रहने लगा है और वह ज्योतिर्मयी के रूप पर मुग्ध होकर उसे ढूँढ रहा है। पर ज्यों ही उसे पता चला, वह इस कोशिश में लगी कि राजकुमार की ज्योतिर्मयी से भेंट न हो सके। वह तो जानती थी कि पूनों के बाद ज्योतिर्मयी का तेज घटने लगता है और वह कुरूप बन जाती है। अगर राजकुमार उसको उस समय देख ले तो जरूर उससे घृणा करने लगेगा। इसलिए उसने ऐसा मन्त्र मार दिया कि राजकुमार का पूनों के अन्दर ज्योतिर्मयी से मिलन न हो सके।

उस दुष्ट वनदेवी के मन्त्र के प्रभाव से राजकुमार भटक भटक कर हार गया। मगर ज्योतिर्मयी उसे कहीं दिखाई न पड़ी।

एक दिन निराश होकर राजकुमार एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। पूनों कब की बीत गई थी। अमावास आ गई थी। दुष्ट वनदेवी का मन्त्र उस दिन समाप्त होने वाला था। राजकुमार उदास मन से पेड़ की छाया में बैठा हुआ था। इतने में बादल घिर आए। बिजली चमकने लगी और पल में मूसलधार पानी पड़ने लगा।

इतने में राजकुमार को कोई आहट सुनाई पड़ी। बिजली की चमक में राजकुमार ने चारों ओर देखा। उसे मालूम हुआ कि बरगद के दूसरी ओर कोई बैठा है। उसने नजदीक जाकर देखा—एक बुढ़िया चादर ओढ़े दुबकी बैठी थी। वह जाड़े से थर थर काँप रही थी। राजकुमार ने बुढ़िया के माथे पर हाथ डाल कर देखा तो मालूम हुआ कि

ज़ोर का बुखार चढ़ा हुआ है। तब राजकुमार ने बुढ़िया को अपनी गोदी में लिटा लिया और अपने लोटे में से थोड़ा पानी उसे पिला दिया।

आश्चर्य! वह बुढ़िया तुरन्त एक सुन्दरी राजकुमारी के रूप में बदल गई। राजकुमार ने उसे तुरन्त पहचान लिया। यह तो वही देवी थी जो चांदनी रात में नाचती दिखाई दे जाती थी। यह वही सुन्दरी थी जिसके लिए वह इतने दिनों से जंगल की खाक छान रहा था।

थोड़ी देर में पानी बरसना बन्द हो गया। पौ फटी और रात बीत गई। इतने बरसों के बाद ज्योतिर्मयी ने दिन का प्रकाश देखा। उस भयङ्कर शाप से वह मुक्त हो गई थी। थोड़ी देर में सातों वनदेवियों ने आकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया। राजा ने बड़ी धूम-धाम से ज्योतिर्मयी का विवाह उस राजकुमार से कर दिया। वे दोनों सुख से रहने लगे।

राजा बूढ़ा हुआ। उसने अपने दामाद को अपना राज दे दिया। ज्योतिर्मयी अपने पति के साथ गद्दी पर बैठी और राज करने लगी। दोनों एक दूसरे को दिल से प्यार करते थे। केवल बाहरी रूप पर मुग्ध होकर नहीं। राजकुमार जानता था कि रूप सदा एक-सा नहीं रहता है। इसीलिए तो उसने बुढ़िया की सेवा की थी। रूप रहे या जाय, पर सच्चा प्यार दिन-दिन बढ़ता ही जाता है। घटने का नाम नहीं लेता। राजकुमार के प्रेम से राजकुमारी का शाप दूर हो गया। और वह दुष्ट देवी? क्या उसे कोई सज़ा न मिली? जो बिना कारण किसी से डाह करता है, बुराई करता है, सताता है, वह चैन से कैसे रह सकता है? राजा ने उसे दण्ड दिया। जिस तरह राम की आज्ञा से सीता को सताने वाली शूर्पनखा के नाक-कान कट गए थे, उसी तरह उस दुष्टा की भी वही दुर्गति हुई। नाक-कान कट जाने पर उसकी दुष्टता छूट गई और वह राजकुमारी से प्रेम करने लगी।

सोने का पानी

एक राजा था। उसके एक रानी थी। उनके दो पुत्र और एक पुत्री थी। उस राजा को उसकी सारी प्रजा जी-जान से प्यार करती थी। लोग आपस में कहते थे कि इससे बढ़ कर दूसरा कोई राजा नहीं है। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है! एक दिन राजा अचानक बीमार पड़ा और चौबीस घण्टों के अन्दर ही चल बसा। रानी भी राजा के वियोग में बीमार हो गई। राज के बड़े-बड़े हकीम-वैद्य सभी रानी का इलाज करने आए। तरह-तरह की दवाएँ दी गईं। लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। क्योंकि रानी को तो राजा की चिन्ता थी। चिन्ता के लिए दवा कहाँ मिलती है!

इतने में एक दिन एक साधू उस राज में आया। उसे सब जगह रानी की बीमारी ही की चर्चा सुनाई पड़ी। तब उसने सोचा—'चलूँ, एक बार रानी को देख तो आऊँ।' वह किले की ओर चला। लेकिन पहरेदार उसे अन्दर क्यों आने देने लगे! उन्होंने डाँट कर कहा—'जा! जा! बड़ा इलाज करने आया है! ऐसे बहुत आए और गए।' लेकिन साधू वहाँ से न हिला। वह अन्दर जाने के लिए बार-बार गिड़गिड़ाने लगा। आखिर जब पहरेदारों ने देखा कि यह पिंड छोड़ने वाला नहीं, तो उस हठी को उन्होंने अन्दर भेज दिया। साधू रानी के पास पहुँचा और बीमारी की जाँच करके कहा—"बेटी! तुम्हारी बीमारी तन की नहीं, मन की है। इस पर मामूली दवाएँ काम नहीं करतीं। ऐसी बीमारी का इलाज सिर्फ साधू-महात्मा ही कर सकते हैं।"

साधू की बातें सुन कर रानी को बहुत खुशी हुई। उसने हाथ जोड़ कर विनय-भाव से कहा—'महाराज! आप सचमुच महात्मा हैं। आपने मेरी बीमारी ठीक-ठीक पहचान

प्रभावती देवी

की है। मेरे भाग से आपके दर्शन हुए। क्या आप मेरे रोग का कोई इलाज बता सकते हैं?'

"इलाज तो है, लेकिन है वह बड़ा कठिन। इस शहर से बहुत दूर उत्तर दिशा में एक राक्षसी रहती है। उस राक्षसी के बाग में तीन विचित्र वस्तुएँ हैं। अगर कोई वे तीनों चीज़ें वहाँ से ले आए, तो तुम्हारा रोग दूर हो सकता है। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन उनको लाना बहुत मुश्किल काम है।" साधू ने कहा।

दोनों राजकुमार वहीं खड़े थे। उन्होंने जोश के साथ कहा—'संसार में कोई ऐसा

काम नहीं है, जिसे हम नहीं कर सकते। आप उनका पता बताइए। हम ले आएँगे।'

"अच्छा तो सुनो! उस बाग में गाने वाला पेड़, बोलने वाला पंछी और सोने का पानी है। अगर तुम तीनों चीज़ें वहाँ से ले आओ तो तुम्हारी माँ चंगी हो जाएगी। लेकिन सावधान! बड़ी होशियारी से काम करना।" यह कह कर वह साधू अन्तर्धान हो गया।

पहली बार बड़ा लड़का राज-भूषण ये चीज़ें लाने चला। उसने कहा—'अगर मैं तीन महीने के अन्दर लौट कर आ गया तो ठीक है। न आया तो समझ लेना कि कोई दुर्घटना हो गई है।' यह कह कर वह वहाँ से रवाना हुआ।

बहुत दूर तक जाने के बाद राजकुमार को एक बड़ा रेगिस्तान दिखाई पड़ा। वहाँ दूर-दूर तक बालू के सिवा और कुछ देखने में न आता था। लेकिन जगह-जगह पत्थर की मूर्तियाँ पड़ी हुई थीं। थोड़ी दूर जाने के बाद पीछे से उसे किसी ने पुकार कर कहा—'हे राज-भूषण! मेरी बात मान कर तुम घर लौट जाओ। तुमसे यह काम नहीं हो सकता।' पहले तो राज भूषण ने सोचा कि

पीछे मुड़ कर उसे करारा जवाब दें। लेकिन फिर यह सोच कर कि यह सब राक्षसों की माया है, वह सीधे आगे बढ़ता गया।

थोड़ी दूर जाने पर उसे सामने एक बूढ़ा आता दिखाई दिया। उस बूढ़े ने नजदीक आकर कहा—"तुमने जिस काम का बीड़ा उठाया है, वह बड़ा कठिन है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं। अगर तुम मेरे कहे अनुसार चलोगे तो जरूर कामयाब होगे।"

'आपकी बात सिर आँखों पर।' राज-भूषण ने कहा।

"तुम जानते हो कि ये सब पत्थर की मूर्तियाँ क्या हैं? ये भी किसी समय तुम्हारी तरह राजकुमार थे। ये भी इसी काम पर आए थे। वे शाप के कारण पत्थर की मूरतें बन गए हैं। तुमने सुना है न, पीछे से कोई तुम्हें पुकार रहा था। पीछे मुड़ कर अगर उसे कोई जवाब न दोगे, तो वे तुम्हें पत्थरों से मारेंगे। अगर तब भी तुम पीछे न मुड़े तो वे तुम पर थूकेंगे। यह सब राक्षसों की माया है। तुम अगर उनकी बातों में पड़ कर पीछे देखोगे तो तुम भी तुरन्त पत्थर की मूरत बन जाओगे।" बूढ़े ने कहा। राज-भूषण उस बूढ़े को धन्यवाद देकर आगे बढ़ चला। थोड़ी दूर जाने के बाद पीछे से किसी ने उसे फिर पुकारा। लेकिन राजकुमार ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। तब पीछे से किसी ने उसे पत्थरों से मारा। फिर भी राजकुमार ने इसकी कोई परवाह न की। माँ की बीमारी दूर करने के लिए वह सभी कष्ट झेलने को तैयार हो गया। लेकिन इतने में पीछे से किसी ने उस पर थूक दिया। बस, तुरन्त राजकुमार को गुस्सा आ गया। वह तलवार निकाल कर दुष्ट को दण्ड देने के लिए पीछे मुड़ा। अब क्या था! राजकुमार तुरन्त एक पत्थर की मूरत बन गया।

तीन महीने बीत गए। लेकिन राज-भूषण लौट कर न आया। तब सब को निश्चय हो गया कि वह ज़रूर किसी न किसी आफ़त में फँस गया होगा। इसलिए दूसरा राजकुमार सुगुण-भूषण इसका पता लगाने चला। उसने भी तीन महीने के अन्दर लौट आने का वचन दिया। राह में उसे भी भाई की तरह कष्ट झेलने पड़े। उसने धीरज से सब कुछ सह लिया। लेकिन जब पीछे से किसी ने उस पर थूक दिया तो वह भी यह अपमान न सह सका। तलवार निकाल कर पीछे मुड़ा और पल में पत्थर की मूरत हो गया।

जब तीन महीने बीत गए और सुगुण-भूषण भी लौट कर नहीं आया तो सब लोगों को निश्चय हो गया कि वह भी किसी आफ़त में फँस गया। तब राजकुमारी हेमलता ने कहा कि मैं उन दोनों का पता लगाने जाऊँगी। पहले उसे सब लोगों ने रोका। दोनों राजकुमार लापता हो गए थे। अब वह भी चली जाती तो फिर रानी किसको देख कर मन में धीरज धरती! रानी ने भी उसे मना किया। लेकिन राजकुमारी ने किसी की न सुनी। उसने कहा—"अगर मैं अपने भाइयों की संकट में सहायता न कर सकूँ तो फिर मैं जी कर क्या करूँगी! चाहे जो भी हो जाय, मैं तो जाऊँगी ज़रूर। देख लेना, मैं अपने भाइयों के साथ तीन महीने के अन्दर लौट आती हूँ कि नहीं!" और वह चल पड़ी।

राजकुमारी को भी वह बूढ़ा दिखाई दिया। उस कोमल राजकुमारी को इतने कठिन कार्य का बोझ उठाते देख कर बूढ़े को बड़ी दया आ गई। इसलिए उसने उसकी पूरी सहायता करने का निश्चय कर लिया। वह भी राजकुमारी के पीछे पीछे चला और क़दम क़दम पर उसे धीरज बँधाता रहा।

राजकुमारी ने बूढ़े की बातों का अक्षरशः पालन किया। वह कभी पीछे न मुड़ी। उसके दोनों भाई मर्द थे। इसलिए उन्हें जल्दी रोष आ गया था। लेकिन राजकुमारी ने बूढ़े की कृपा से कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। बूढ़ा भी उसके पीछे पीछे उचित सलाह देता हुआ चल रहा था।

थोड़ी ही देर में राजकुमारी राक्षसी के राज में पहुँच गई। उसे आगे किसी नदी का चमकता हुआ जगमग करता हुआ, पानी दिखाई दिया। तब बूढ़े ने उससे कहा— 'यही सोने का पानी है। उसकी एक बूंद छूते ही मरे हुए आदमी भी जी उठते हैं। भयङ्कर से भयङ्कर रोग भी दूर हो जाते हैं।' यह बात सुनते ही राजकुमारी ने एक बोतल निकाली और उसमें सोने का पानी भर लिया।

पास ही एक पेड़ था। उस पेड़ के नीचे जाते ही राजकुमारी को एक मधुर गान सुनाई दिया। उसी पेड़ की एक डाल से एक पिंजड़ा लटक रहा था। उसी में एक पंछी था। उसने राजकुमारी को देखते ही नाम लेकर पुकारा। यही वह बोलने वाला पंछी था। इन दोनों को देखते ही राजकुमारी बहुत खुश हुई कि अब मेरा काम पूरा हो गया। तब बूढ़े ने उससे कहा —'राजकुमारी! इस पेड़ की एक डाल तोड़ लो। उसे तुम अपने बाग में गाड़ दो तो वह फिर एक बड़ा पेड़ बन जाएगा। इस में जो पंछी है वह तुम्हें अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाएगा। ये दोनों जिस जगह रहेंगे वहाँ हमेशा सुख-शांति बरसती रहेगी।" राजकुमारी ने उस पेड़ की एक डाल तोड़ ली और पिंजड़ा भी उतार कर साथ ले लिया। अब वह खुशी खुशी घर लौट चली।

थोड़ी ही दूर जाने पर उसे पत्थर की एक मूरत दिखाई दी। उसने बूढ़े की बात याद करके उस मूर्ति पर एक बूंद सोने का पानी डाला। तुरन्त वह मूर्ति सुन्दर राजकुमार के रूप में बदल गई। यह देख कर राजकुमारी ने आश्चर्य के साथ सभी मूरतों पर सोने का पानी डाला। तुरन्त सभी मूर्तियाँ राजकुमारों के रूप में बदल गईं। उन्हीं राजकुमारों में उसके दोनों भाई भी थे। उनको देखते ही राजकुमारी की खुशी का ठिकाना न रहा। अब तीनों खुशी-खुशी माँ की याद करते हुए घर पहुँचे।

इन तीनों को देखते ही रानी की आधी बीमारी दूर हो गई। सोने का पानी छिड़कने पर तो वह एक दम चंगी हो गई। सब लोग राजकुमारी की प्रशंसा करने लगे। लेकिन राजकुमारी को वह बूढ़ा याद आ रहा था जिस की सहायता से यह काम पूरा हो सका था।

इतने में उसने देखा कि वही बूढ़ा उसके महल के दरवाजे पर खड़ा है। राजकुमारी ने तुरन्त उसे अन्दर बुला कर उसकी बड़ी खातिर की। उसने उसे नहला-धुला कर रेशमी कपड़े पहनाए। लेकिन आश्चर्य यह कि वे कपड़े पहनते ही वह बूढ़ा एक सुन्दर राजकुमार बन गया। उसने कहा—"मैं भी एक राजकुमार था। मैं भी तुम्हारी तरह इन्हीं तीनों चीज़ों के लिए घर छोड़ कर चला था। लेकिन राक्षसी के शाप से मेरी यह दशा हुई। आज राजकुमारी की कृपा से मेरा शाप छूट गया।" यह सुन कर रानी को बड़ी खुशी हुई। उसने उस राजकुमार से राजकुमारी का ब्याह कर दिया। अब सब लोग सुख से रहने लगे।

बहुत पहले अब्बास नाम का एक लड़का रहता था। उसके जैसा भला लड़का दूसरा कोई न था। बेचारे के माँ-बाप बचपन में उसे छोड़ कर चल बसे थे। इसलिए एक दयालु मनुष्य अब्बास का पालन-पोषण कर रहा था।

एक बार अब्बास के देश में अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। अब्बास का मालिक बड़ी चिन्ता में पड़ गया। वह अब्बास को बहुत प्यार करता था। लेकिन इस हालत में क्या करे!

इसलिए उसने अब्बास को बुला कर कहा—'बेटा! जब तक बदन में ताकत थी, घर में दौलत थी, मैंने तुम्हारा पोषण किया। लेकिन अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। तिस पर चारों ओर अकाल पड़ गया है। मैं अपने बुढ़ापे की वजह से कहीं नहीं जा सकता। लेकिन तुम्हारे हाथों में ताकत है। तुम क्यों यहाँ घुल-घुल कर मरोगे! तुम परदेश जाकर आसानी से अपनी जान बचा सकते हो। इसलिए मैं तुम्हें यहाँ से दूर भेज देना चाहता हूँ।' अब्बास पहले तो राजी न हुआ। लेकिन बूढ़े के बहुत कहने सुनने पर वह उससे विदा लेकर घर से चलता हुआ। चलते-चलते बहुत दूर जाने पर उसे एक पुराने किले के खंडहर दिखाई दिए। तब तक साँझ हो गई थी।

अब्बास थका हुआ तो था ही। उस किले में जाकर लेट रहा। उसे तुरन्त नींद आ गई। लेकिन नींद में उसे ऐसा मालूम हुआ, मानों किसी ने उसका कंधा छुआ हो। वह तुरन्त जाग पड़ा। आँख खोलने पर उसे सिर्फ एक हाथ और उसमें एक दीया दिखाई दिया। अब्बास को बड़ा अचरज हुआ। उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया जब उसने देखा कि वह हाथ धीरे-धीरे एक ओर जा

भगतलाल

रहा है। वह भी उठ कर उस हाथ के पीछे पीछे चला और एक महल में जा घुसा।

उस महल में अनगिनत कमरे थे। एक बड़े कमरे में अनेकों पकवानों के साथ भोजन परोसा रखा था। अब्बास भूखा तो था ही। उसने बैठ कर पेट भर भोजन कर लिया। फिर हाथ धोकर दीए के पीछे-पीछे चला। थोड़ी दूर जाने पर एक सुन्दर कमरे में तरह तरह की पोशाकें रखी मिलीं। अब्बास ने अपने फटे-पुराने चिथड़े उतार फेंके और राजकुमारों के से रेशमी कपड़े पहन लिए। वहीं एक मुलायम पलङ्ग भी सजा हुआ था। वह उस पर लेट कर सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे जागते ही अब्बास को कहीं से एक आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने सुना—'अब्बास! तुम बड़े साहसी और सहनशील हो। इस क़िले में बहुत से लोग आए और गए। मगर कोई तुम्हारी तरह हिम्मत बाँध कर दीए के पीछे-पीछे न चल सका। अगर तुम थोड़ा और साहस दिखा कर इस क़िले में तीन रात बिता सको तो इससे एक राजकुमारी को बन्धन से छुटकारा मिलेगा। इससे तुम्हारा भी बहुत भला होगा।' यह सुन कर अब्बास ने निश्चय कर लिया कि चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए, राजकुमारी को वह ज़रूर छुड़ा देगा।

जब रात हो गई तो अब्बास फिर पिछली रात की तरह खाना खाकर उसी पलङ्ग पर सो रहा। लेकिन आधी रात होते ही बहुत से लोग हाथों में लाठियाँ लिए आए और उन्होंने अब्बास को खूब पीटा। बेचारे की हड्डी-पसली चूर-चूर हो गई। लेकिन सवेरा होते-होते किसी ने अब्बास के सारे बदन पर ऐसा मरहम मल दिया जिससे उसके सभी घाव तुरन्त अच्छे हो गए। दर्द बिलकुल नहीं रहा।

दूसरी रात को भी वे लोग फिर आए। उन्होंने उसे और भी पीटा। लेकिन अब्बास

के मुँह से 'उफ़' तक न निकला। उसने सब कुछ सह लिया। किसी ने सवेरा होते ही फिर उसके बदन पर मल्हम लगा दिया और उसका सारा दर्द दूर हो गया। तीसरी रात को भी उन लोगों ने आकर अब्बास का कचूमर निकाल दिया। लेकिन अब्बास ने साहस के साथ सब कुछ सह लिया। उस रात को वह जागता रहा। क्योंकि वह देखना चाहता था कि कौन उसके बदन पर मल्हम लगा जाता है। सवेरा होते-होते वह काँपने लगा था कि इतने में किवाड़ खोल कर एक राजकुमारी वहाँ आई। उसने अब्बास के बदन पर मल्हम लगा दिया। तुरन्त उसके घाव भर गए। सारा दर्द गायब हो गया और वह फिर ज्यों-का-त्यों हो गया।

अब्बास के पूछने पर उस राजकुमारी ने अपनी कहानी सुनाई—"मैं यवन-देश की राजकुमारी हूँ। मुझे दुश्मनों ने लाकर इस किले में बन्द कर दिया। उनके जादू के प्रभाव से मैं यहाँ बरसों से यों ही पड़ी रही हूँ। अगर कोई इस किले में तीन रात बिताता तो जादू टूट जाता और मुझे रिहाई मिलती। इस किले में बहुत से राजकुमार भटकते-भटकते आए। लेकिन कोई एक रात से ज्यादा न ठहर सका। लेकिन तुम्हारी कृपा से आज वह जादू टूट गया और मुझे मुक्ति मिल गई। मैं अब अपने पिता के घर जाती हूँ। तुम मुझसे वहाँ आकर मिलना।" यह कह कर वह राजकुमारी आँखों से ओझल हो गई।

जादू टूटते ही अब्बास के रेशमी कपड़े गायब हो गए और उनकी जगह वही पुराने चिथड़े वापस आ गए। वह फिर पुराना अब्बास बन गया।

राजकुमारी अपने पिता के घर जाकर बहुत दिनों तक अब्बास की राह देखती रही। लेकिन उसे निराश होना पड़ा। आख़िर उसके पिता ने उसका ब्याह करने का

निश्चय किया। यहाँ तक कि ब्याह का दिन भी आ गया। राजकुमारी हाथी पर चढ़ कर जुलूस में निकली। इतने में उसकी नजर तमाशा देखने वाले भिखमंगों पर पड़ी। उसने देखा, अब्बास भिखमंगों में छिपा उनके बीच खड़ा है। राजकुमारी के सिवा वहाँ अब्बास को कोई पहचानता न था।

तब राजकुमारी ने अपने पिता से और जितने सामन्त लोग हाजिर थे, उनसे एक प्रश्न किया—'कुछ दिन पहले मेरे सन्दूक की कुंजी खो गई थी। तब मैंने नई कुंजी बनवाई। लेकिन नई कुंजी के बनते ही पुरानी कुंजी मिल गई। आप लोग बताइए—मैं किस कुंजी से काम लूँ?' तब सब ने जवाब दिया कि पुरानी कुंजी को काम में लाना ही ठीक है। राजकुमारी तुरन्त हाथी से उतर कर भिखमंगों के बीच चली। वह अब्बास का हाथ पकड़ कर खींच लाई। उसने उसे सबके सामने खड़ा कर दिया और कहा—'यही वह कुंजी है।' सब लोग दंग रह गए। तब राजकुमारी ने अपनी मुक्ति की सारी कहानी कह सुनाई। अब लोगों की समझ में आ गया कि राजकुमारी ने कुंजियों वाला विचित्र प्रश्न क्यों किया था। लोगों को बड़ी खुशी हुई। उनका जवाब भी अब्बास के पक्ष में ही था। सभी ने एक स्वर में कहा—'राजकुमारी! तुम अवश्य अब्बास के साथ शादी करो। यह देवता ने भी गढ़ा है तुम्हारे लिए।' यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। उसका सारा संकोच दूर हो गया और उसने बड़े ठाट-बाट से राजकुमारी का ब्याह अब्बास के साथ कर दिया।

अब्बास के कष्ट के दिन कट गए। अब वह राजकुमारी के साथ सुख से रहने लगा।

एक समय एक जङ्गल में महादेव लिंग-रूप में प्रकट हुए। उस जङ्गल में रात के वक्त एक काल-नाग विचरा करता था। वह नाग महादेव का बड़ा भक्त था। उसने जब उस लिंग को देखा तो संकल्प किया कि वह रोज रात को लिंग की पूजा करेगा। उस नाग के पास अनमोल मणियों का ढेर था। वह उन मणियों को बहुत चाहता था। इसलिए उसने मणियों से महादेव की पूजा करनी चाही। वह अपनी बाँबी में गया और अपने खजाने से तरह तरह के मणि-माणिक ले आया। वह बड़ी भक्ति के साथ उन्हें लिंग के ऊपर चढ़ा कर चला गया।

उस जंगल में एक गजराज भी रहता था। वह हाथियों का राजा था। एक दिन वह गजराज वहाँ आया और उस लिंग को देख कर मुग्ध हो गया। वह भी महादेव का बड़ा भक्त था। उसने झट सूँड़ उठा कर शिवजी को प्रणाम किया। लेकिन जब उसकी नजर मणियों पर पड़ी तो उसे बड़ा गुस्सा आया। साँप मणियों पसन्द करता है। पर हाथी को वे क्यों पसन्द पड़ें! उसने सोचा—"कौन है वह बदमाश जो शिवजी के ऊपर कङ्कड़-पत्थर रख गया है!" उसने उन मणि-माणिकों को उठा कर दूर फेंक दिया और चला गया।

गजराज को क्या मालूम था कि वे मणियाँ हैं, कङ्कड़-पत्थर नहीं और जिस साँप ने उनसे पूजा की वह भी महादेव का बड़ा भारी भक्त है! उसका तो ख्याल था कि कङ्कड़ पत्थर शिवजी के निकट रखने योग्य नहीं है। इसलिए उसने उन्हें उठा कर दूर फेंक दिया था।

जिस तरह साँप को मणि-माणिक प्यारे होते हैं, उसी तरह हाथी को फूल-पत्तों से

रामचन्द्र शास्त्री

प्रेम होता है। गजराज थोड़ी देर तक जंगल में घूम-फिर कर बेल के पत्ते तोड़ लाया। पोखर से कमल के फूल और पत्ते ले आया। फिर बड़ी देर तक शिवजी की पूजा करके घर लौट गया।

रात हुई। नई-नई मणियाँ लेकर नागराज बड़े उत्साह से शिवजी की पूजा करने आया। आकर देखता क्या है कि उसकी वे प्यारी मणियाँ दूर धूल में फेंकी हुई हैं और शिवजी के ऊपर फूल-पत्तों का कूड़ा-करकट पड़ा हुआ है। गजराज भक्ति-भाव से जो फूल-पत्ते तोड़ लाया था साँप ने उन्हें कूड़ा-करकट समझ लिया। उसने सोचा—"कौन है वह दुष्ट जो मेरी पूजा-वस्तु दूर फेंक कर महादेव का ऐसा अपमान कर गया है?" उसने वे फूल-पत्ते बड़े क्रोध से चुन-चुन कर दूर फेंक दिए और मणियों से पूजा करके वहाँ से चला गया।

दूसरे दिन फिर गजराज पत्र-पुष्प लेकर शिवजी की पूजा करने आया। तब उसने देखा कि उसके दल-फूल दूर फेंके हुए हैं और शिवजी के ऊपर कंकड़-पत्थर जमा हैं। उसने सोचा—"वह दुष्ट तो फिर यहाँ आया और आ कर यों ही नहीं गया। वह पूजा की सामग्री दूर फेंक कर फिर कंकड़-पत्थर डाल गया!" उसने क्रोध से फिर एक-एक करके सभी मणियाँ चुन कर दूर फेंक दीं और फूल-पत्तों से पूजा करके घर चला गया। इस तरह दो दिन बीत गए। तीसरी रात को नागराज फिर मणि-माणिक लेकर पूजा करने आया तो अपनी पूजा-वस्तुएँ बिखरी देख कर उसे बड़ा दुख हुआ। शिवजी को नाहक के फूल-पत्तों से ढका हुआ देख कर उसे बड़ा गुस्सा भी आया। उसने बड़ी दीनता से देखते हुए कहा—"भगवन्! मैं रोज़ आकर अमूल्य मणियों से आपकी पूजा कर जाता

है। लेकिन कोई दुष्ट आकर मेरी पूजा के चिह्न तक मिटा कर आप पर झाड़-झंखाड़ रख जाता है। आप उसे कुछ नहीं कहते। आप अपनी तीसरी आँख खोल कर उसे पल में राख क्यों नहीं कर देते? क्या आप इतना भी नहीं कर सकते हैं? हाय! मैं कितना मूढ़ हूँ! ईश्वर होकर आप क्या नहीं कर सकते हैं! मालूम होता है, आप जान-बूझ कर चुप रह गए हैं। अपने इस भक्त को ठुकरा कर आप भी मेरे दुश्मन से मिल गए हैं। आप ऐसा क्यों करते हैं प्रभो! बताइए, मेरा क्या कसूर है?" इस तरह बहुत देर तक वह आँसू बहाता रहा। आखिर किसी तरह ढाढ़स बाँध कर उसने अपने आँसू पोंछे और चुन-चुन कर दल-फूल दूर फेंक दिए। फिर झाड़-पोंछ कर उसने मणियों से शिवजी की पूजा की। पूजा के बाद बाँबी में लौटने के बाद भी नागराज को नींद न आई। वह इसी सोच में पड़ा रहा कि कैसे उस दुष्ट का पता लगे जो रोज आकर उसकी पूजा बिगाड़ जाता है?

दूसरे दिन हाथी शिवजी की पूजा करने आया तो उसने देखा कि उसके फूल-पत्ते फिर चुन-चुन कर फेंक दिए गए हैं और लिंग के ऊपर कंकड़-पत्थर पड़े हैं। उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने शिवजी पर सवालों की झड़ी लगा दी—"कौन है यह मूर्ख जो बार बार मुझे यों छेड़ता है? खैर, उसकी बात छोड़ दीजिए! मगर यह तो बताइए कि आपको कंकड़-पत्थर कैसे भाते हैं? क्या ये अनगढ़ नीले पत्थर मेरे नील-कमलों की बराबरी करेंगे? क्या ये हरे पत्थर मेरे बिल्व-पत्रों से भी बढ़े-चढ़े हैं? क्या ये भद्दे लाल पत्थर मेरे अरुण-कमलों के समान हो सकते हैं? मेरे अभी खिले हुए फूलों में जो कोमलता, शीतलता और सुगन्ध है वह

इन कठोर, कुरूप और जड़ पत्थरों में कहाँ से आएगी!" आखिर उसने सोचा—'अच्छा, आज तो मैं किसी तरह चुप रहता हूँ। लेकिन अगर कल भी ऐसा ही हुआ तो चाहे जो हो जाय मैं उस दुष्ट की जान लिए बिना नहीं रहूँगा।' यह सोच कर वह रोज की तरह ही पूजा करके चला गया। लेकिन उसे भी उस दिन इस चिंता के कारण नींद न आई।

रात को नागराज फिर पूजा करने आ पहुँचा। लेकिन फिर अपनी पूजा-सामग्री को भग्न देख कर वह क्रोध से काँपने लगा। उसने सोचा—"कौन दुष्ट रोज इस तरह मेरा और भगवान का अपमान करता है! आज मैं उसका पता लगाए बिना न रहूँगा। जब तक मैं उसको मजा न चखा दूँ तब तक यहाँ से न हिलूँगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।" इसलिए उसने उस दिन फूल-पत्तों को उठा कर फेंका नहीं, बल्कि उन्हीं में छिप कर घात लगाए बैठा रहा।

ठीक समय पर गजराज भी आ पहुँचा। अपने फूल-पत्ते ज्यों-के-त्यों देख कर उसे जो खुशी हुई उसका क्या कहना! उसने सोचा—"अहा! आज मैं कैसा भाग्यशाली हूँ! मालूम होता है वह दुष्ट कहीं चला गया जो रोज़ यहाँ कङ्कड़-पत्थर जमा कर जाता था। शायद मर गया होगा। मुझ पर दया करके महादेव ने ही मार डाला होगा।" यह सोच कर गजराज ने उन बासी फूलों को हटाने के लिए अपनी सूँड़ बढ़ाई।

नागराज छिपा-छिपा यह सब देख ही रहा था। उसने मन में कहा—"अच्छा, तो इतने दिनों से आप ही मेरी पूजा भ्रष्ट कर रहे थे! भले आए! अब लीजिए, अपनी करनी का फल चखिए। महादेव की कृपा से

आपको अभी मज़ा चखाता हूँ।" यह कह कर वह साँप सर्र से हाथी की सूँड़ में घुस गया। वह भीतर-ही-भीतर उसके माथे तक पहुँच गया और नोचने लगा।

अब क्या था? सूँड़ तो हाथी की नाक ही होती है! माथे तक साँप के घुसने और काटने से हाथी को जो भयङ्कर पीड़ा हुई उसका वर्णन कौन करे? हाथी बौखला कर इधर-उधर दौड़ने और सूँड़ पटकने लगा। तालाब में जाकर उसने सूँड़ में बार-बार पानी भरा और ज़ोर ज़ोर से बाहर छोड़ा। लेकिन तब भी साँप न निकला। वह अन्दर ही चिपका रहा गया। तब हाथी पेड़ों से जा टकराया और सूँड़ रगड़ने लगा। लेकिन फिर भी साँप न निकला।

अब गजराज नाकों दम हो गया। उसने सोचा—"यह साँप तो मेरे माथे में ज़हर उगल कर मुझे खतम करेगा ही। फिर मैं ही इसे क्यों जीने दूँ? सबसे अच्छा तो यही है कि मैं अपनी जान देकर भी इसे मार डालूँ।" यह सोच कर उसने मरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। सामने पहाड़ था। हाथी पहले खूब पीछे हटा और बड़ी तेज़ी के साथ दौड़ा। उसने पहाड़ की एक भारी चट्टान से अपना माथा भिड़ा दिया। बस, एक ही आघात में साँप का कचूमर निकल गया। लेकिन हाथी की भी हड्डी पसली चूर हो गई और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। रक्त का फव्वारा छूटा और वह वहीं ढेर हो गया।

कुछ देर बाद पार्वती महादेव से मिलने वहाँ आईं। साँप और हाथी को वहीं मरा पड़ा देख कर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। उनके पूछने पर शिवजी ने सारा किस्सा कह सुनाया। तब पार्वती ने कहा—"ये दोनों तो आपके भारी भक्त हैं।" तब शिवजी ने

कहा—"दोनों मेरे भक्त तो हैं। मगर इनमें एक बड़ा भारी दोष था। दोष यह था कि इनको एक दूसरे की पूजा फूटी आँखों नहीं भाती थी। इसी से इनकी यह दुर्गति हुई। दुनियाँ में तरह-तरह के लोग रहते हैं। वे तरह-तरह से मेरी पूजा करते हैं। मेरे लिए सब बराबर हैं। मुझे साँप की मणियाँ, हाथी के फूल-पत्ते दोनों प्रिय हैं। लेकिन यह रहस्य ये मूढ़ भक्त न समझ सके। इस लिए ये एक दूसरे से लड़ मरे। हर एक आदमी को अधिकार है कि वह अपनी रीति-नीति पर दृढ़ रहे। साथ ही दूसरे की रीति-नीति का भी आदर करे। अपने ढङ्ग को सबसे अच्छा जान कर दूसरों से वैर-विरोध मोल न ले। पूजा का यही ढङ्ग सबसे अच्छा है।"

"आपका कहना बहुत ठीक है।" पार्वती ने कहा।

महादेव की दया से दोनों मोक्ष पा गए।

धीरे-धीरे उस शिव-लिंग की महिमा चारों ओर फैली। साथ-साथ साँप और हाथी की भक्ति-कहानी भी फैली। तब वहाँ के एक भक्त राजा ने उस जङ्गल को साफ करवाया और वहाँ एक मंदिर बनवा दिया। धीरे-धीरे मंदिर के चारों ओर एक बस्ती बस गई। उस का नाम पड़ा 'कालहस्ती'। 'काल' का माने होता है 'साँप'। 'हस्ती' का माने होता है 'हाथी'। उस जगह साँप और हाथी को मोक्ष मिला था। इसलिए उसका नाम पड़ा 'कालहस्ती'। इस कालहस्ती में स्वर्ण-मुखी नामक एक नदी है जिसमें सब यात्री नहाते हैं। यहाँ शिव-रात्रि के दिन बड़ा भारी उत्सव होता है। लाखों लोग यहाँ आकर भगवान शिवजी के दर्शन करते हैं।

देखो !

ऊपर के नौ चित्रों में सब एक से दिखाई देते हैं। लेकिन वास्तव में नहीं हैं। उनमें सिर्फ दो एक से हैं। बताओ तो देखें, वे दोनों कौन से हैं ! अगर न बता सको तो जवाब के लिए २७-वां पृष्ठ देखो।

स्नान

हर रोज़ सुबह-शाम दोनों वक्त नहाने से स्वास्थ्य को बहुत लाभ पहुँचता है। खास कर सवेरे नहाना तो बहुत ज़रूरी है। तीन चार लोटे पानी उँडेल कर बदन भिगो लेना नहलाना नहीं कहलाता। सारे बदन को भीगे हुए तौलिए से खूब मल-मल कर नहाना चाहिए। इससे बदन पर जमा हुआ मैल दूर हो जाता है।

तबीयत अच्छी न होने पर गरम पानी से नहाना ज़रूरी हो जाता है। नहीं तो ठण्डे पानी से नहाना ही अच्छा है। बहुत लोगों को ठण्डे पानी से नहाते हुए डर आती है। वे समझते हैं कि ठण्डे पानी में नहाते ही उन्हें डबल न्यूमोनिया हो जाएगा। लेकिन नहीं; स्वस्थ मनुष्य को ठण्डे पानी से ही नहाना चाहिए।

नहाने के पहले सारे बदन में तेल लगा कर मलने से बहुत फ़ायदा पहुँचता है। पीछे साबुन लगा कर धो लेने से बदन साफ़ हो जाता है। इससे त्वचा-सम्बन्धी बीमारियाँ नहीं होतीं। आजकल बाज़ार में सस्ते-मँहगे तरह-तरह के साबुन भी मिलते हैं।

नहाने के लिए बहता पानी ही सबसे अच्छा है। लेकिन जहाँ-जहाँ नदियाँ वगैरह न हों, वहाँ पोखर में या कुएँ पर जाकर नहा सकते हैं।

बच्चे रोज़ नियम से नहाते हैं या नहीं, इस पर ध्यान रखना बड़ों का कर्तव्य है। नियमपूर्वक स्नान न करने से बच्चे आलसी, कामचोर और चिड़चिड़े मिज़ाज के बन जाते हैं।

जिनको अधिक कठिनाइयाँ न हों वे अपने घर में नहाने के लिए एक अलग कमरा बनवा सकते हैं। इससे औरतों को नहाने में बड़ी सुविधा होगी।

तुम्हारी दीदी।

प्यारे बच्चो !
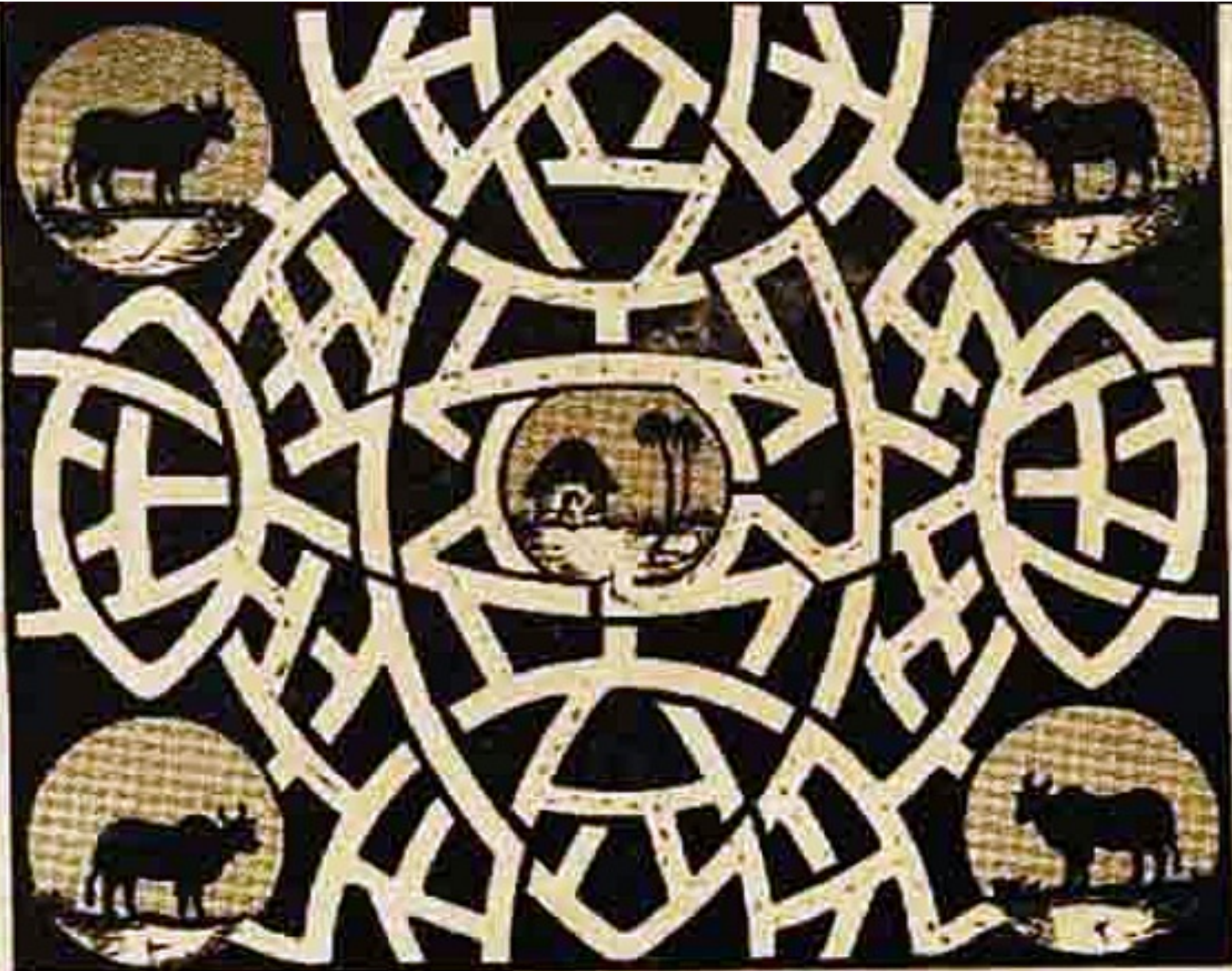
ऊपर के वर्ग के चारों कोनों में चार बैल हैं। वर्ग के बीचों-बीच एक खेत है। चारों बैल उस खेत में जाना चाहते हैं। लेकिन एक ही बैल जा सकता है। बताओ तो देखें, वह बैल कौन सा है!

४५-वें पृष्ठ की नौ चित्रों वाली पहेली का जवाब:

६ और ८-वीं संख्या वाले चित्र एक से हैं।

केले के टुकड़े

यह छोटे बड़े सभी को अचरज में डालने वाला तमाशा है। लेकिन यह सबसे आसान भी है। तुम कभी कभी दावत में जाते होगे या दावत देते होगे। दावत के पहले ही तुम घर पर केलों का गुच्छा मँगा लो। गुच्छे में से फल मत तोड़ो। अब एक सुई ले लो। उस सुई से केले में चुभा कर सुई को इस तरह घुमाओ, कि गूदा तो कट जाए, मगर छिलका न कटे। सुई को केले में चुभा कर धीरे धीरे चारों ओर घुमाओगे तो यह आसानी से हो जाएगा। (इसी पृष्ठ में चित्र देखो) पहले एक केले में सुई को इसी तरह तीन जगह चुभा कर तीन टुकड़े कर लो। दूसरे फल के चार टुकड़े कर लो। इस तरह सभी फलों में सुई के द्वारा किसी के दो, किसी के चार, किसी के पाँच इस तरह टुकड़े कर लो। लेकिन सभी फलों को अलग अलग रख कर किस फल में कितने टुकड़े हैं, याद रखना जरूरी है। सुई से छेद करना भी सावधानी से हो, जिससे छिलके ऊपर के निशान न दिखाई पड़ें।

तुम दावत में आकर केलों को सिलसिले से एक मेज पर रख दो। फिर अपने दोस्तों से कहना कि 'आज मैं तुम्हें एक तमाशा

दिखाऊँगा।' तब सब लोग उत्सुक होकर तुम्हारी तरफ देखने लगेंगे। तब तुम एक केला हाथ में लेकर कहो कि 'देखिए, मैं ज्यों ही इस केले को छीलूँगा त्यों ही यह अपने आप तीन टुकड़े होकर गिर जाएगा।
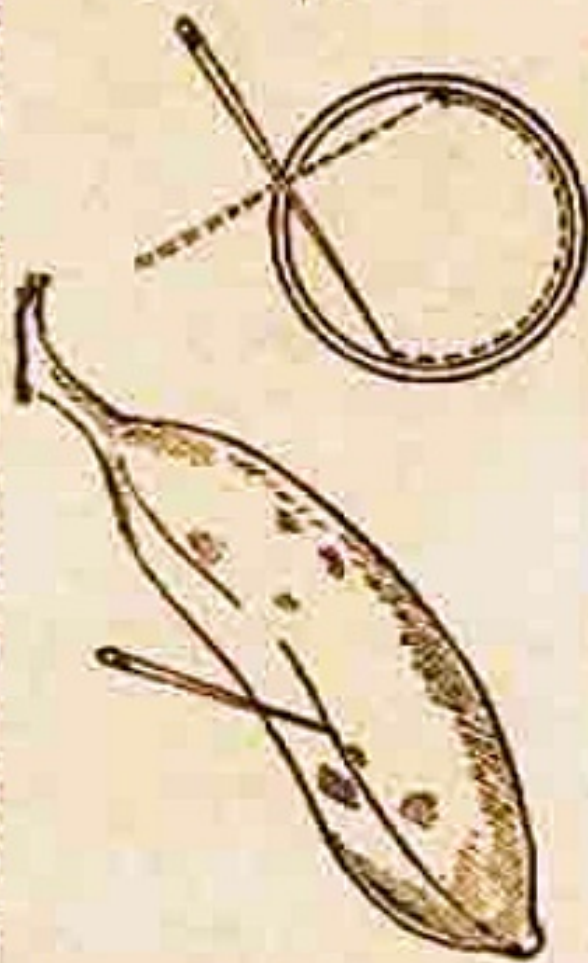
तब तुम्हारे दोस्त कहेंगे कि 'ज़रूर इस फल में कोई न कोई धोखा है।' तब तुम वह फल बिना हिचकिचाए उनके हाथों में रख दो। वे उसे उलट-पुलट कर देखेंगे। लेकिन उन्हें कुछ न दिखाई पड़ेगा। तब तुम केले को लेकर छीलोगे और वह अपने आप तीन टुकड़े होकर गिर पड़ेगा। दूसरे फल को लेकर कहोगे कि 'इसके चार टुकड़े कर दिखाऊँगा।' वह भी उसी तरह चार टुकड़े हो जाएगा। इसी तरह और केले भी। तुम्हारे दोस्त सब समझेंगे कि तुम कोई बड़े भारी जादूगर हो। लेकिन असली रहस्य उनकी समझ में नहीं आएगा। [जो प्रोफ़ेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चंदामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मैजीशियन
पो. बा. १८७८ कलकत्ता 12]

१४२८५७ यह एक संख्या है। अपने दोस्त से कहो कि वह यह संख्या लिख ले। फिर इस संख्या को २ से ६ तक किसी भी अंक से गुणा करने को कहो। जो जवाब होगा वह तुम्हें जानने की जरूरत नहीं है। तुम उस में से सिर्फ किसी भी स्थान का एक अंक जान लो। तुम उस अंक को उसी स्थान में लिख लो। इसके जरिए तुम सिर्फ पूरी संख्या ही नहीं, बल्कि यह भी बता सकोगे कि किस अंक से उसको गुणा किया गया था।

लो, अब इसका रहस्य बताता हूं सुनो:— १४२८५७ नामक इस संख्या को २ से ६ तक किसी भी अंक से क्यों न गुणा करो, ये ही अंक स्थान बदल कर आ जायेंगे। समझ लो कि तुम्हारे दोस्त ने इस संख्या को ४ से गुणा किया—१४२८५७ × ४ = ५७१४२८। समझ लो कि तुम्हारे दोस्त ने तुम्हें तीसरे स्थान का १ बताया। उसकी बाईं ओर ५, ७ और दाईं ओर ४, २, ८ लिख कर तुम पूरा गुणनफल ही नहीं; बल्कि यह भी बता सकोगे कि इसे ४ से गुणा किया गया है।

ज़रा इधर देखिए, साहब!

चार नौ एक सौ होते हैं।

$$\frac{९}{९} = १$$

इसलिए

$$९९\frac{९}{९} = १००$$

आठ आठ एक हजार होते हैं।

```
 ८८८
  ८८
   ८
   ८
   ८
────
१०००
────
```
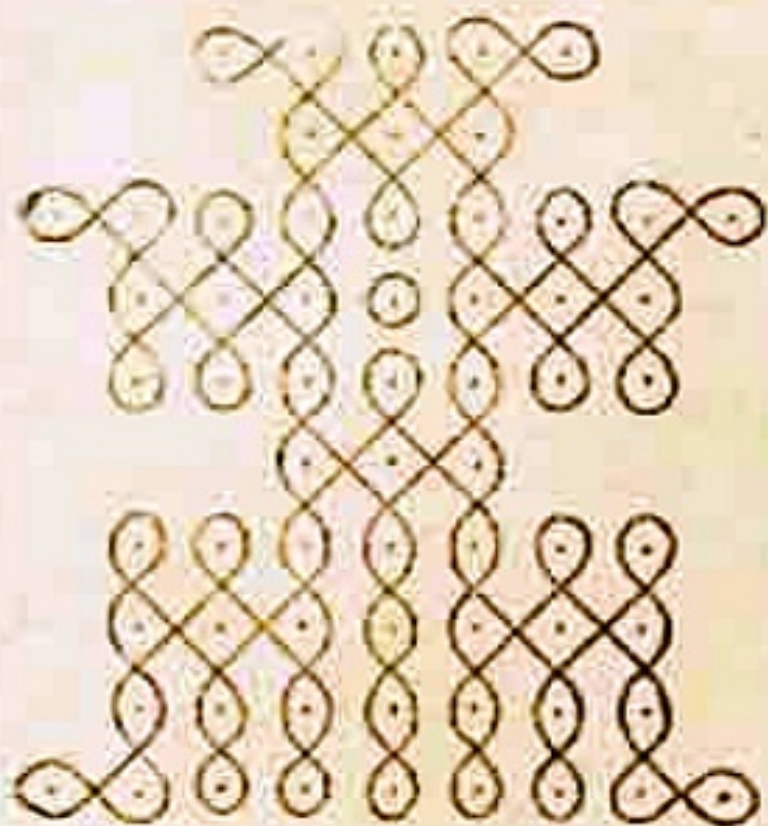
रमा देवी
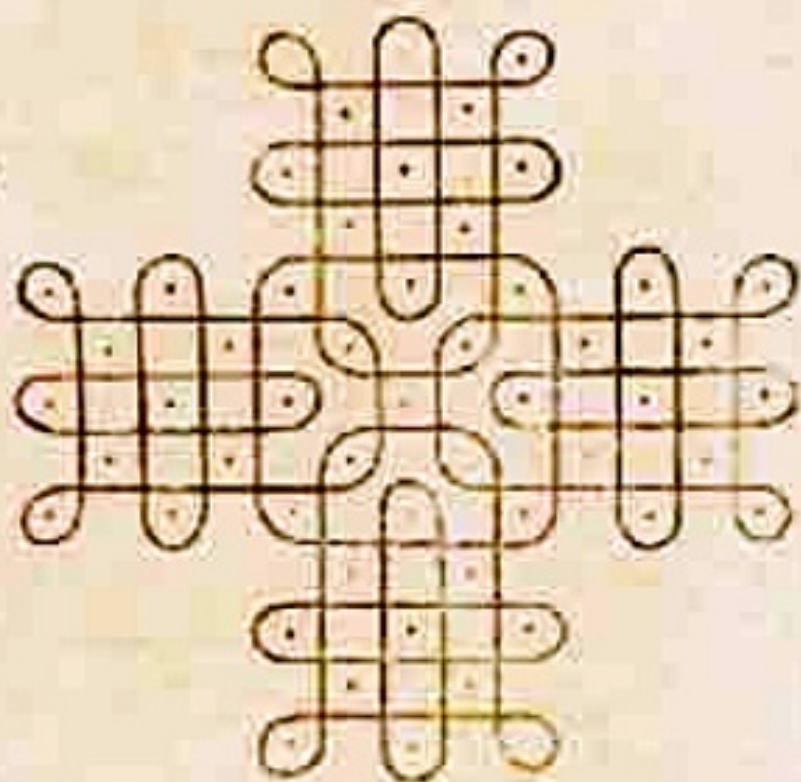
कुमारी अमला
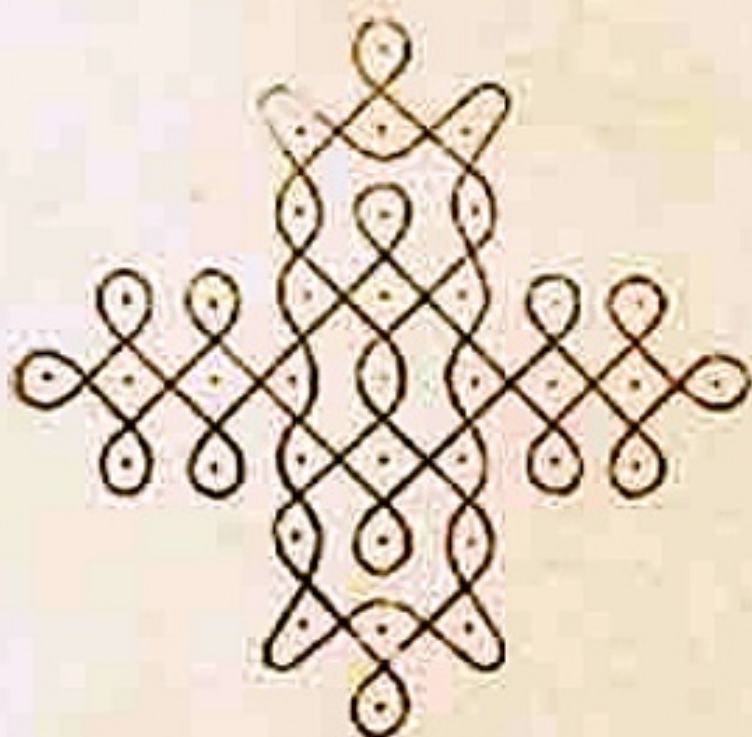
कमलकुमारी
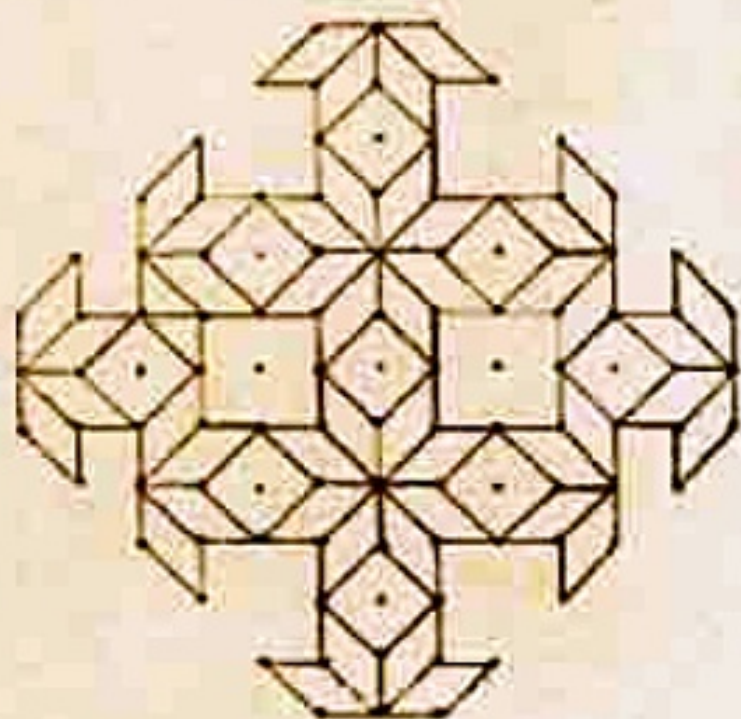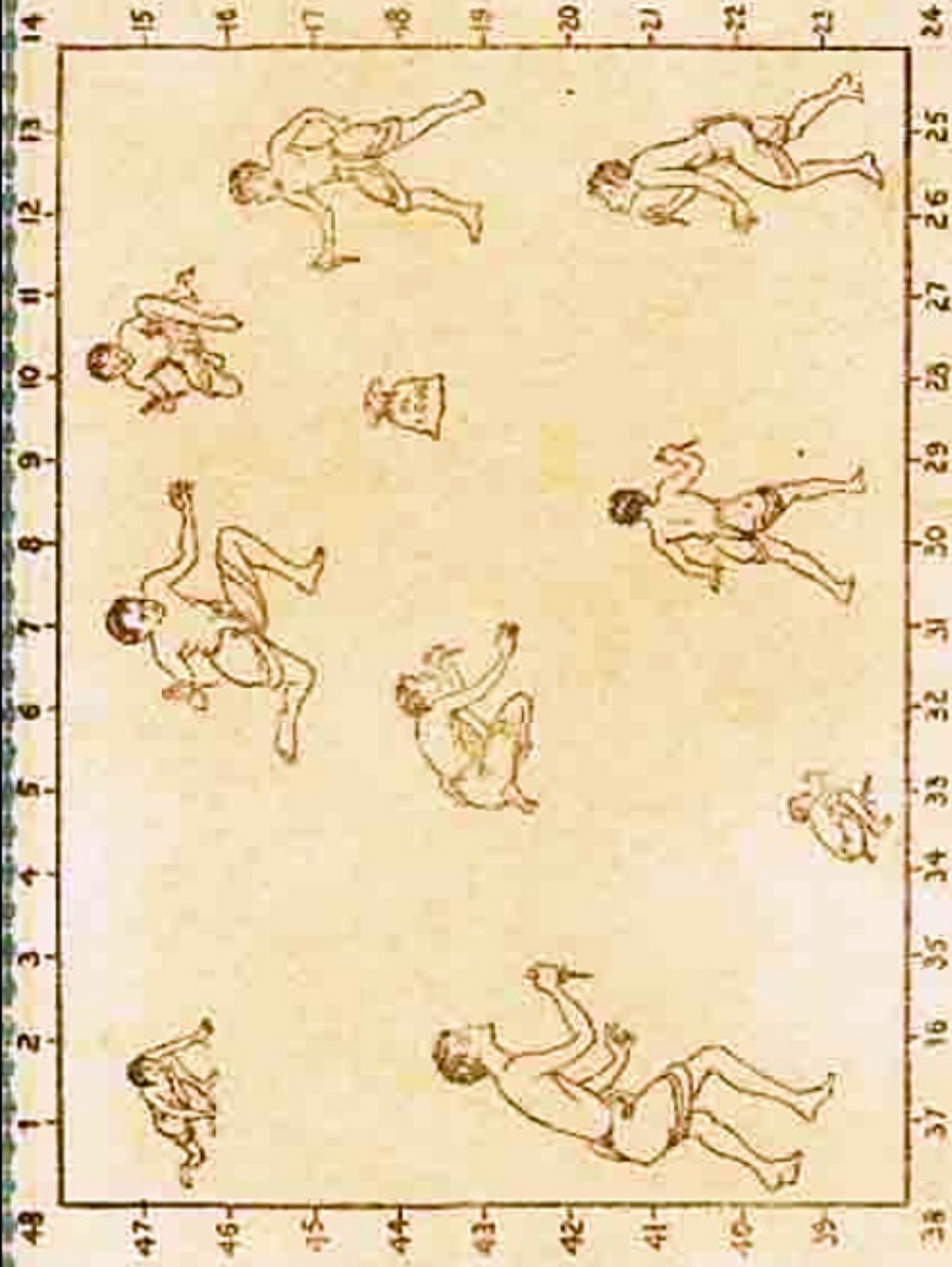
बच्चो ! ऊपर का चित्र देखो। चित्र में नौ चोर हैं। एक ओर एक रुपयों की थैली है। नवों चोर एक दूसरे को मार कर रुपयों की थैली ले लेना चाहते हैं। अब तुम्हें सिर्फ चार लकीरें खींच कर नवों चोरों और रुपयों की थैली को एक दूसरे से अलग कर देना है। अगर तुम यह न कर सको तो जवाब के लिए ५५-वां पृष्ठ देखो !

चन्दामामा पहेली

संकेत

बाएँ से दाएँ

१. दुर्भिक्ष

४. शिथिल

७. भयंकर

८. कृष्ण की जाति

९. गरमी

११. समुद्र

ऊपर से नीचे

२. इस पर लिखते हैं।

३. आफत

४. जो सही नहीं।

५. कंगन

६. एक व्रत
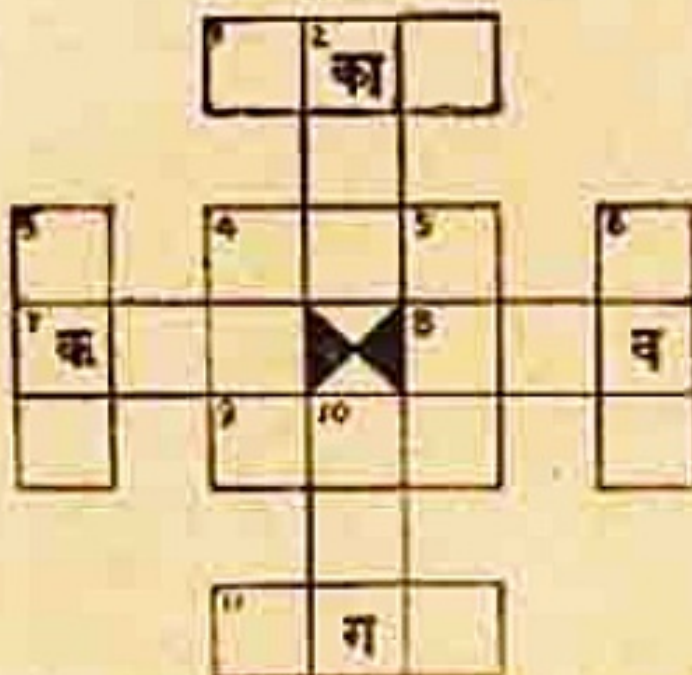
१०. बच्चे उड़ाते हैं।

●

यह छः हिस्सों में कटी हुई एक जानवर की तस्वीर है। इन हिस्सों को यदि फिर ठीक ठीक मिलाया जाए तो जानवर दिखाई पड़ेगा। यदि तुम यह न कर तो ५५-वाँ पृष्ठ देखो।

★

जमींदार साहब का घोड़ा

जमींदार साहब को देख कर उस गाँव के सभी लोग डरते थे। लंबे-तगड़े आदमी थे। घुँघुराले बाल, बड़ी-बड़ी मूँछें, हाथ में हमेशा एक मोटा, चिकना डण्डा।

जमींदार साहब के एक घोड़ा था जिसको वे बहुत चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक बार क़सम खाई थी कि उस घोड़े के मरने की बात जिसकी जीभ से निकलेगी उसे वे इमली के पेड़ की डाल से लटका कर फाँसी दे देंगे।

कुछ ही दिनों बाद जमींदार साहब का घोड़ा मर गया। तब सवाल यह उठा कि यह खबर जमींदार साहब को कौन पहुँचाए? उन्होंने जो क़सम खाई थी कि घोड़े के मरने की बात बोलने वाले को इमली के पेड़ पर फाँसी दे देंगे, वह सब को याद थी। लेकिन उनको यह खबर सुनाना जरूरी था। सभी नौकर-चाकर सोच में पड़ गए। उन्हें न सूझा कि क्या किया जाए?

इतने में जमींदार साहब के अस्तबल में काम करने वाला एक १५, १६ बरस का छोकरा जिसका नाम रामू था सामने आया। उसने कहा कि 'मैं जमींदार साहब को यह खबर पहुँचाऊँगा।'

उसे सब लोगों ने मना किया कि 'क्यों नाहक अपनी जान खोता है?' लेकिन वह न माना और जमींदार साहब की कोठी की ओर चला। उसने जमींदार साहब के पास पहुँच कर बड़ी विनय के साथ बन्दगी बजाई। तब जमींदार साहब ने मूँछों पर ताव देते हुए उसकी ओर देख कर कहा—"क्या रे राम! क्या काम है?"

"कुछ नहीं हुजूर! वैसे ही आ गया था।" रामू ने कहा।

"अस्तबल से तो आ रहा होगा। हमारा घोड़ा अच्छी तरह है न?"

"घोड़े का क्या कहना है हुजूर! बहुत अच्छी तरह है! लेकिन हुजूर! आज घोड़े

की आँखें खुली हैं; लेकिन उनमें नज़र नहीं है। उसकी चारों टाँगें सलामत हैं; लेकिन वे हिलती-डुलती नहीं। वह चारों खाने चित पड़ा हुआ है। आधे कीचड़ और आधे धूप में। एक ओर भींग रहा है और एक ओर सूख रहा है। घोड़े की सिर्फ़ साँस नहीं चलती। लेकिन वह बहुत अच्छी तरह है। घोड़े का क्या पूछना हुज़ूर !"

"हाय! हाय! तो क्या हमारा घोड़ा मर गया?" ज़मींदार साहब ने शोक में डूब कर पूछा।

"यह तो मेरे मुँह से कभी नहीं निकला। आप ही ने कहा कि घोड़ा मर गया। तो हुज़ूर! चलिए, न इमली के पेड़ पर लटकने?" रामू ने कहा।

अब ज़मींदार साहब को अपनी क़सम याद आ गई। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"अरे रामू! यह बात भूल से मेरे मुँह से निकल गई थी। ले, ये अशर्फ़ियाँ ले ले! और देख, यह बात किसी से कहना मत!"

रामू वे अशर्फ़ियाँ लेकर खुशी-खुशी घर चला गया। उसकी जान बची देख कर बाक़ी सब नौकर-चाकर अचरज करने लगे। यह रहस्य किसी की समझ में न आया।

चन्दामामा पहेली का जवाब:

		[1] अ	[2] का	ल		
			ग			
[3] से		[4] ग	ज	[5] बं		[6] चा
[7] क	रा	ल	■	[8] या	द	व
ट		[9] त	[10] प	न		ल
			तं			
		[11] सा	ग	र		
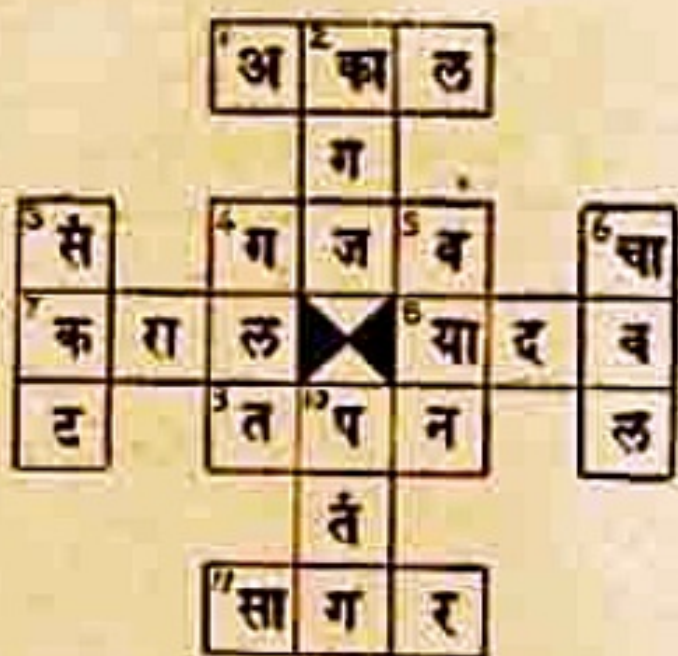
फटी हुई तस्वीर वाली पहेली का जवाब:
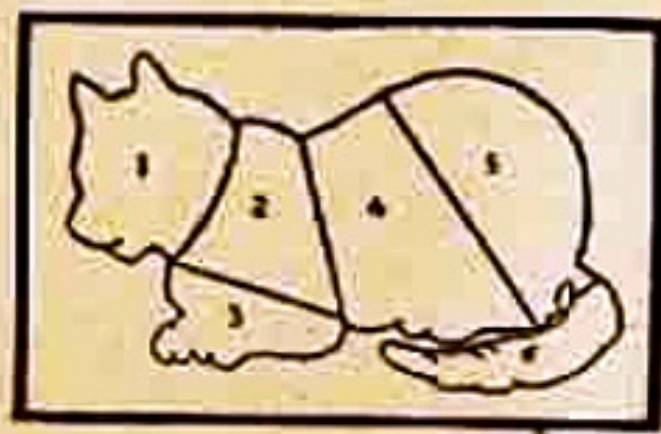
नौ चोरों वाली पहेली का जवाब:

निम्नलिखित प्रकार से लकीर खींच कर चोरों को अलग कर सकते हैं।

२ से ३२ तक, ९ से २६ तक

११ से ३५ तक, २० से ५६ तक

इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

Chandamama April '50 Photo by K. Krishnan

दुश्मनी

CHITRA